प्रकाशक

बिहार-हिन्दी-मन्दिर

बांकीपुर, पटना

मुद्रक

युनाइटेड प्रेस लि०, पटना

१६१

पीयनी

मुद्रक
युनाइटेड प्रेस लि०, पटना

दो शब्द

देशपूज्य श्री राजेन्द्र प्रसाद जी के जीवन चरित लिखे जाने की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। किसी सुयोग्य व्यक्ति को इस काम को हाथ में लेते न देख कर मैं ही दुस्साहसपूर्वक इस काम में लग गया और जैसा कुछ हो सका इसे तैयार किया। इस में मैं कहां तक सफल या असफल हुआ हूं इसका विचार तो सुयोग्य पाठक ही कर सकेंगे, पर इतना मैं कह सकता हूं कि जीवन चरित को प्रामाणिक बनाने की मैंने शक्ति भर चेष्टा की है।

इसके लिखने में आदि से अन्त तक मुझे सबसे अधिक सहायता पूज्य श्री बद्रीनाथ जी वर्मा से मिली है। राजेन्द्र बाबू के जीवन की घटनाओं की सबसे अधिक जानकारी रखनेवालों में आप एक हैं, क्योंकि विद्यार्थी अवस्था से लेकर आज तक आप राजेन्द्र बाबू के प्रायः सभी कार्यों में एक प्रमुख सहायक और साथी रहे हैं। आपने जो कृपाकर बहुत ही परिश्रमपूर्वक कई बार पुस्तक की पाण्डुलिपि देख ली है और आवश्यक संशोधन आदि किये हैं, उसके लिये मैं अत्यन्त आभारी हूं। आपके अलावे इस पुस्तक के लिखने में पूज्य श्री ब्रजकिशोर प्रसाद, बा० महेन्द्र प्रसाद, बा० अनुग्रह नारायण सिंह, बा० मथुरा प्रसाद सिंह, बा० मुरली मनोहर प्रसाद, बा० कृष्णवल्लभ सहाय, प्रो० ज्ञान साहा, पं० छविनाथ पाण्डेय, बा० सतीशचन्द्र गुह आदि से भी सहायता मिली है, जिसके लिये यह लेखक बहुत कृतज्ञ है। पुस्तक के लिखे जाने पर 'कर्मवीर' सम्पादक विद्वद्वर पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी ने भी इसे एक बार देख जाने की कृपा कर लेखक को आभारी बनाया है।

दो शब्द

देशपूज्य श्री राजेन्द्र प्रसाद जी के जीवन चरित लिखे जाने की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। किसी सुयोग्य व्यक्ति को इस काम को हाथ में लेते न देख कर मैं ही दुस्साहसपूर्वक इस काम में लग गया और जैसा कुछ हो सका इसे तैयार किया। इस में मैं कहां तक सफल या असफल हुआ हूं इसका विचार तो सुयोग्य पाठक ही कर सकेंगे, पर इतना मैं कह सकता हूं कि जीवन चरित को प्रामाणिक बनाने की मैंने शक्ति भर चेष्टा की है।

इसके लिखने में आदि से अन्त तक मुझे सबसे अधिक सहायता पूज्य श्री बदरीनाथ जी वर्मा से मिली है। राजेन्द्र बाबू के जीवन की घटनाओं की सबसे अधिक जानकारी रखनेवालों में आप एक हैं, क्योंकि विद्यार्थी अवस्था से लेकर आज तक आप राजेन्द्र बाबू के प्रायः सभी कार्यों में एक प्रमुख सहायक और साथी रहे हैं। आपने जो कृपाकर बहुत ही परिश्रमपूर्वक कई बार पुस्तक की पाण्डुलिपि देख ली है और आवश्यक संशोधन आदि किये हैं, उसके लिये मैं अत्यन्त आभारी हूं। आपके अलावे इस पुस्तक के लिखने में पूज्य श्री ब्रजकिशोर प्रसाद, बा० महेन्द्र प्रसाद, बा० अनुग्रह नारायण सिंह, बा० मथुरा प्रसाद सिंह, बा० मुरली मनोहर प्रसाद, बा० कृष्णवल्लभ सहाय, प्रो० ज्ञान साहा, पं० छविनाथ पाण्डेय, बा० सतीशचन्द्र गुह आदि से भी सहायता मिली है, जिसके लिये यह लेखक बहुत कृतज्ञ है। पुस्तक के लिखे जाने पर 'कर्मवीर' सम्पादक विद्वद्वर पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी ने भी इसे एक बार देख जाने की कृपा कर लेखक को आभारी बनाया है।

पुस्तक के प्रकाशन कार्य में बा० रामकृष्ण डालमिया, बा० गौरीशंकर डालमिया, बा० जगजीत नारायण श्रीवास्तव, बा० मथुरा प्रसाद, बा० तारिणी प्रसाद राय, और बा० गोपालकृष्ण प्रसाद जी ने जैसी कुछ सहायता पहुंचायी है उसके लिये उन सज्जनों को अनेकानेक धन्यवाद हैं।

विहार-हिन्दी-मन्दिर
बांकीपुर, पटना

गदाधर प्रसाद अम्बष्ट

देशपूज्य श्री राजेन्द्र प्रसाद

विद्यार्थी अवस्था

Childhood shows the man
As morning shows the day

वंशपरिचय

बिहारभूमि सदा से महापुरुषोंकी जननी रही है। इस युग में भी इस भूमि ने एक महापुरुष को जन्म दिया है, जिन्हें लोग आज द्वितीय गांधी समझते हैं। हमारा जिस महापुरुष की ओर इशारा है वे हैं देशपूज्य श्री राजेन्द्र प्रसाद जी।

आपका जन्म बिहार प्रान्त में सारन जिलान्तर्गत सिवान थाने के जीरादेई ग्राममें सम्वत् १९४१ के अगहन की पूर्णिमा तदनुसार ३ दिसम्बर सन् १८८४ ई० को श्रीवास्तव्य कायस्थ कुल में हुआ। आपके पिता का नाम मुन्शी महादेव सहाय जी था। आपका घराना बहुत मशहूर घराना रहा है। कई पुश्तों से आपके घराने के लोग किसी न किसी राज्यमें दीवान का काम करते रहे। कहते हैं कि आपके पूर्वपुरुष बहुत प्राचीन काल में फतहपुर सिकरी के पास रहते थे और वहीं पुर सिकरी के राजा के दीवान थे। आज से लगभग २०० पूर्व वे लोग वहांसे युक्तप्रान्त के अमोढ़ा नामक एक स्थान में

आये । उस खानदान के एक व्यक्ति बाबू हुलमन पाण्डेय अमोढ़ा से बलिया पहुंचे और वहीं हरदी राज के दीवान हुए । बहुत दिनों के बाद उनकी पांचवीं पीढ़ी के एक व्यक्ति बाबू चित्तू दास जी सारन जिले के जीरादेई ग्राम में चले आये और यहीं उन्होंने अपना घर बनाया । इस परिवार ने यहांपर अपने लिये एक खासी जमींदारी हासिल कर ली और खेती के लिये काफी जमीन भी उपार्जित की । बा० चित्तू दास जी की पांचवीं पीढ़ी में दीवान चौधुरलाल साहब एक लोकप्रिय और नामी व्यक्ति हुए । सारन जिलान्तर्गत हथुआ राज के महाराज छत्रधारी साही और महाराज इन्द्रप्रताप साही के समय में बाबू चौधुर लाल जी उस राज के दीवान रहे । इनके सुप्रबन्ध से हथुआ राज की बड़ी तरक्की हुई, आज जो कुछ इसकी श्रीवृद्धि दीख पड़ती है, उसका अधिकांश श्रेय दीवान चौधुर लाल जी का ही बताया जाता है । महाराज इनकी कारगुजारी, नेकनियती और इमानदारी देखकर इनपर बहुत प्रसन्न रहा करते थे । राज के अन्दर इनका बड़ा रोबदाब था । महाराज इन्द्रप्रताप साही के मरने से राजके कोर्ट आफ वार्ड्स में चले जाने के बाद चौधुर लाल जी गोरखपुर जिलान्तर्गत तमकुही राज में दीवान का काम करने लगे । बाबू चौधुर लाल जी हमारे चरितनायक बाबू राजेन्द्र प्रसादजी के पितामह बाबू मिश्री लाल जी के सहोदर भाई थे । बाबू मिश्री लाल सिर्फ इक्कीस वर्ष की अवस्था में परलोक सिधारे, उस समय बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के पिता बाबू महादेव सहाय जी की उम्र केवल डेढ़ वर्ष की थी, इसलिये बा० महादेव सहाय जी के लालन पालन का भार दीवान साहब के ऊपर पड़ा ।

बाबू महादेव सहाय बड़े साधु प्रकृति के व्यक्ति हुए। उन्हें लोगों की सेवा करने और दीन दुखियों को सहायता पहुंचाने में बड़ा आनन्द आता था। आपको आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा का अच्छा ज्ञान था। इसके द्वारा आपने लोगों की बड़ी सेवा की। आप अपने खर्च से दवा बना बना कर लोगों में बांटा करते थे। वैद्यक आपका पेशा नहीं था। राजेन्द्र बाबू की माता जी भी बड़ी ही सरल और साधु प्रकृति की थीं। इसका प्रभाव राजेन्द्र बाबू पर बहुत पड़ा और यही कारण हुआ कि आपने भी अपना जीवन लोकसेवा में ही लगाना अपना ध्येय बनाया। बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी निस्सन्देह अपने योग्य मातापिता के योग्य पुत्र हुए।

आकरे पद्मरागाणां जन्म काचमणेः कुतः।

बाबू महादेव सहाय जी के दो लड़के और तीन लड़कियां हुईं, जिनमें एक लड़की की मृत्यु बचपन में और दूसरी की करीब तीस वर्ष की अवस्था में हुई। बाकी तीन सन्तान इस समय मौजूद हैं। तीनों लड़कियों के बाद बा० महेन्द्र प्रसाद जी का और तत्पश्चात बा० राजेन्द्र प्रसाद जी का जन्म हुआ था। दोनों भाइयों के पठन पाठन का कार्य अपने पिता और दादा दीवान साहब की देखरेख में आरम्भ हुआ।

बाल्यकाल और स्कूल जीवन

हमारे चरितनायक बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ६ ७ वर्ष की उम्र में गांव में ही एक मौलवी साहब के पास पढ़ने को बैठाये गये। उन दिनों आजकल की तरह लोअर प्राइमरी और अपर प्राइमरी

पाठशालाएं नहीं थीं। गावों में मौलवी और पंडित ही लड़कों को फारसी और संस्कृत की शिक्षा दिया करते थे। राजेन्द्र बाबू तो सुतीक्ष्ण बुद्धि थे ही, थोड़े ही दिनों में आपने फारसी की कई किताबें खतम कर डालीं और फारसी लिखने पढ़ने की अच्छी योग्यता प्राप्त करली। परन्तु उस समय तक आपको हिन्दी या अंगरेजी की कुछ भी जानकारी नहीं थी, हां, कैथी लिखने का कुछ ज्ञान हो गया था।

मौलवी साहब के यहां पढ़ना समाप्त करने के बाद बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ९ वर्ष की अवस्था में १८९३ ई० के अन्त में छपरा जिला स्कूल में भर्ती हुए। उस समय आपके बड़े भाई बा० महेन्द्र प्रसादजी छपरा जिला स्कूल में ही पढ़ रहे थे। उन दिनों इन्ट्रेन्स स्कूलों में ८ क्लास होते थे और सबसे ऊंचे क्लासको फर्स्ट क्लास कहा जाता था। राजेन्द्र बाबू स्कूल में भर्ती होकर अंगरेजी और नागरी वर्णमाला सीखने लगे और कुछ ही दिनों में मजे में हिन्दी पढ़ने लिखने लग गये। करीब साल सवा साल तक आठवें क्लास में रहे। दूसरे वर्ष सन १८९५ की जनवरी में आपके शिक्षकोंने आपको 'डबल प्रोमोशन' देना चाहा। आपके भाई बाबू महेन्द्र प्रसाद जी को यह बात पसन्द नहीं आयी, उन्होंने सोचा कि अभी तो इसने स्कूल में भर्ती होकर पढ़ना आरम्भ किया है, तुरन्त 'डबल प्रोमोशन' दे देना ठीक नहीं होगा, शायद आगे चलकर यह कमजोर हो जाय इसलिये उन्होंने स्कूल के हेडमास्टर श्री क्षीरोद चन्द्र राय चौधरी को, जो एक बंगाली सज्जन थे, कहा कि [illegible] 'डबल प्रोमो-

देना रोक दें। हेडमास्टर ऐसे तेज लड़के को रोकना नहीं चाहते थे, इसलिये वे महेन्द्र बाबू पर बहुत बिगड़ उठे, उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारी अपेक्षा इसे अधिक जानता हूं, इसे 'डबल प्रोमोशन' दूंगा ही। महेन्द्र बाबू चुप रह गये, उनका कुछ वश नहीं चला। आखिर 'डबल प्रोमोशन' हुआ और राजेन्द्र बाबू ८ वें क्लास से सीधे छठें क्लास में आकर पढ़ने लगे और खूब मजे में पढ़ने लगे।

सन १८९५ के मध्य में महेन्द्र बाबू छपरा जिला स्कूल से इन्ट्रेंस पास कर गये और जुलाई महीने में पटना कालेज में भर्ती हुए। ऐसी हालत में बा० राजेन्द्र प्रसाद जी को अकेले छपरे में रहने में दिक्कत थी, इसलिये आप भी अपने भाई के साथ जुलाई में पटना चले आये और टी० के० घोषेज् एकेडमी में छठें क्लास में नाम लिखाया। यहां आप पूरे दो वर्ष तक पढ़ते रहे। १८९७ ई० में महेन्द्र बाबू एफ० ए० पास कर मेडिकल कालेज में पढ़ने के इरादे से कलकत्ते चले गये, इसलिये राजेन्द्र बाबू पटने से लौटकर हथुआ राजस्कूल में चले आये और यहीं पढ़ने लगे। उस समय आप फोर्थ क्लास में थे। उन दिनों हथुआ राज स्कूल की पढ़ाई अच्छी नहीं थी, इससे आपको यहां पढ़ने में मन नहीं लगता था। स्कूल के शिक्षक लड़कों को सबक बिलकुल रट जाने के लिये कहते थे पर आपको सबक रटना पसन्द नहीं था, अतः आपने एक दिन भी अपना पूरा सबक याद नहीं किया। कई महीने तक स्कूल में रहने के बाद आप बीमार पड़ गये और परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके, इस कारण क्लास में तरक्की नहीं मिली।

१८९८ ई० की जनवरी में बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने छपरा जिला स्कूल में फिर फोर्थ क्लास में नाम लिखाया। उस समय से इन्ट्रेंस परीक्षा तक आप बराबर उसी स्कूल में पढ़ते रहे। नीचे की श्रेणी में आपका स्थान द्वितीय तृतीय रहा करता था, किन्तु ऊपर क्लास में आकर आप बराबर प्रथम होते रहे। सेकेण्ड क्लास की वार्षिक परीक्षा के समय आप बीमार पड़ गये। आपको गिल्टी निकल आयी, इससे प्लेग हो जाने की आशंका से तुरत घर चले आये और परीक्षा समाप्त नहीं कर सके। केवल अंगरेजी और गणित की परीक्षा दे सके थे, जिनमें आप सर्व-प्रथम रहे। शिक्षकों ने ऐसे तीव्र-बुद्धि विद्यार्थी को व्यर्थ में रोकना नहीं चाहा। परीक्षा न देने पर भी आपको तरक्की मिल गयी और आपका नाम जनवरी में फर्स्ट क्लास में लिख लिया गया; लेकिन आप लगातार कई महीनों तक बीमार रहे और स्कूल फीस भी नहीं भेजा, इससे स्कूल से आपका नाम कट गया। अच्छे होने पर मार्च महीने में आपने फिर स्कूल में नाम लिखाया। स्कूल में नाम कट जाने से एक भारी कठिनाई उपस्थित हुई। शिक्षा विभाग के नियमानुसार अगर किसी लड़के का नाम फर्स्ट क्लास में पूरे साल तक स्कूल में दर्ज नहीं रहता तो उसे इन्ट्रेन्स परीक्षा में स्कालरशिप नहीं मिलता है। इस नियम के अनुसार आपके लिये स्कालरशिप पाने की गुंजाइश नहीं रह गयी थी। इसलिये शिक्षकों की सलाह से आपने शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर के पास इसके सम्बन्ध में दरख्वास्त दी, जो मंजूर कर ली गयी। १९०२ ई० के मार्च महीने में आपने कलकत्ता युनिवर्सिटी में इन्ट्रेन्स की परीक्षा दी और उसमें सर्व-प्रथम रहे।

कलकत्ता युनिवर्सिटीका दायरा उस समय बहुत बड़ा था, सारा बंगाल, बिहार, आसाम, उड़ीसा और बर्मा उसके अधीन थे। बंगाल से बाहर के विद्यार्थियों को युनिवर्सिटी परीक्षा में कोई अच्छा स्थान पाना बहुत कठिन होता था। परीक्षा में सर्व-प्रथम होने से आपको २०) मासिक स्कालरशिप और कई स्वर्णपदक मिले। अंगरेजी में भी आप सबसे अव्वल हुए थे, इस कारण १०) मासिक का एक और स्कालरशिप मिला।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी बचपन से ही बड़े नियमित रूप से पढ़ते लिखते थे। आप विशेष परिश्रम करते हों, समय कुसमय पढ़ते रहते हों—ऐसी बात नहीं थी। पढ़ने के समय आप पढ़ते और खेलने के समय खेलते थे। किसी विषय को बिल्कुल रट जाना—कंठस्थ कर जाना आपको अच्छा नहीं लगता था। जो कुछ पढ़ते थे सदा मन लगाकर पढ़ते थे। आप बराबर नियमित रूप से स्कूल जाते रहे। एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ जब आप अच्छे रहते हुए बिना विशेष कारण के स्कूल से अनुपस्थित रहे हों।

नियमित रूप से सब काम करने की आदत आपको बचपन से ही रही। खेलकूद में भी आप नियमित रूप से भाग लेते थे। बचपन में आप कबड्डी वगैरह खेला करते थे, जब स्कूल में गये तो फुटबाल भी खेलना शुरू किया। छपरा जिला स्कूल के फुटबाल टीम के आप कैप्टेन भी रहे। खेलकूद में आप भाग लेते थे सही, लेकिन आपका जितना ध्यान मानसिक उन्नति की ओर था उतना शारीरिक उन्नति की ओर नहीं। शरीर का तो अब भी आप ज्यादा

परवाह नहीं करते हैं। दुबले पतले आप जन्म से ही हैं। स्कूल की खेलकूद की प्रतियोगिता में आप भाग नहीं लिया करते थे। एक बार बचपन में आठवें क्लास में छपरा जिला स्कूल में तीन टांग की दौड़ की प्रतियोगिता में आप सम्मिलित हुए थे, जिसमें आप सर्व-प्रथम हुए और आपको पारितोषिक भी मिला। इसके बाद फिर कभी किसी खेलकूद की प्रतियोगिता में शरीक नहीं हुए।

पढ़ने लिखने में बा० राजेन्द्र प्रसाद जी बहुत दत्तचित रहे, इसमें सन्देह नहीं। स्कूल में प्राच्य भाषाओं में आपका पाठ्य विषय फारसी था। पीछे आपकी इच्छा हुई कि फारसी छोड़कर संस्कृत ही अपना विषय रखें, क्योंकि फारसी तो पहले से ही काफी जानते थे। लेकिन स्कूल के एक पण्डित ने आपको संस्कृत लेने से मना किया। संस्कृत पढ़ने की आपकी इच्छा प्रवल थी, इसलिये जव आप फोर्थ क्लास में पहुंचे, तो आपने पं० रघुनन्दन त्रिपाठी से, जो पीछे महामहोपाध्याय हुए, खानगी तौर से संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया। उस समय महामहोपाध्याय पं० रघुनन्दन त्रिपाठी छपरा जिला स्कूल के हेड-पण्डित थे। इन्ट्रेन्स के क्लासों में आजकल की तरह उन दिनों हिन्दी या उरदू कोई पाठ्य विषय नहीं थी; लोग संस्कृत या फारसी पढ़ते थे। स्कूल में ऊपर के क्लासों में इतिहास, भूगोल, अंगरेजी, गणित, ड्राइंग, भौतिक विज्ञान और एक प्राच्य भाषा संस्कृत या फारसी पढ़ायी जाती थी।

लेख लिखने और भाषण देने का अभ्यास बा० राजेन्द्र प्रसाद को शुरू से ही है, स्कूलकी डिबेटिंग सोसाइटी में आप अपना

लेख पढ़ते और भाषण भी दिया करते थे। आपने कई साथियों के सहयोग से छपरा शहर में स्कूल से भिन्न एक डिबेटिंग सोसाइटी कायम की थी। उसमें भी आपका भाषण और लेख-पाठ होता था। जिस समय आप छपरा जिला स्कूल में पढ़ते थे उस समय वहां रायसाहब राजेन्द्र प्रसाद, सुविख्यात विद्वान पं० रामावतार शर्मा, पं० रघुनाथ दूबे, महम्मद यासीन, बा० रसिक लाल राय और पं० रघुनन्दन त्रिपाठी आदि प्रमुख शिक्षक थे। स्कूल के शिक्षकों में रसिक बाबू का प्रभाव आपपर सबसे अधिक पड़ा। वे आपको बहुत मानते थे और पढ़ने लिखने आदि में आपको बराबर मदद करने के लिये तैयार रहते थे। उनकी सुशीलता, सज्जनता और धर्मनिष्ठता तथा रायसाहब राजेन्द्र प्रसाद और पं० रघुनाथ दूबे की शिष्टता, अनुपम विनयशीलता और भगवद्भक्ति का प्रभाव आपपर खूब पड़ा। राजेन्द्र बाबू जिस तरह आज सादे वेष-भूषा में रहते हैं वैसे ही स्कूल कालेज में पढ़ते वक्त भी थे, शौकीनी तो आपमें कभी आयी ही नहीं। धोती, चपकन और टोपी— बस यही आपकी स्कूल की साधारण पोशाक थी। उस वक्त भी आप अंगरेजी बाल नहीं रखते थे और न सिगरेट वगैरह ही पीते थे, गरचे उस समय तक अंगरेजी फैशन का प्रचार थोड़ा बहुत हो गया था और स्कूल कालेज के विद्यार्थी उस रंग में रंगने लग गये थे। बचपन में भी आप बड़े ही शान्त और सुशील प्रकृति के थे। सादगी और विचार की उच्चता और गम्भीरता आपके स्वाभाविक गुण थे। उपर्युक्त सज्जनों के प्रभाव से वे और भी दृढ़ और पुष्ट हो गये। 'नवे वयसि यः शान्तः सः शान्तः इति कथ्यते।'

करते थे। साल के अन्त में उसकी जांच होती थी और उसमें कुछ लोगों को पारितोषिक और स्कालरशिप दिये जाते थे। बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी इस सोसाइटी में बराबर भाग लिया करते थे और लेक्चरों का नोट लिखा करते थे, जिसके लिये आपको कई बार पारितोषिक और छात्रवृत्तियां मिली थीं। सोसाइटी की ओर से 'दी डौन' नामक मासिक पत्र निकलता था, जिसमें बड़े बड़े विद्वानों के लेख रहा करते थे। राजेन्द्र बाबू के भी लिखे कई लेख इसमें प्रकाशित हुए थे।

डौन सोसाइटी स्वदेशी वस्तु के प्रचार का काम भी करती थी। सोसाइटी के शिल्प विभाग में सन १९०१-२ में देश की बनी अनेक प्रकार की वस्तुओं का प्रदर्शन और विक्रय होता था। अनेक स्थानों से चरखे और करघे से तैयार हुए मोटे कपड़ों के थान और गमछा वगैरह संग्रह किये जाते थे। साल के अन्त में जो जो खरीदार अधिक संख्या में और अधिक मूल्य का कैश मेमो दिखाते थे उन्हें पुरस्कार मिलता था। यह पुरस्कार भी राजेन्द्र बाबू ने कई बार पाया था। ये बातें बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन के कुछ समय पहले की ही हैं।

सन १९०४-५ में प्रधानतः डौन सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं को लेकर ही भारत के प्रथम राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बंगदेशस्थ जातीय शिक्षा परिषद् और बंगाल नेशनल कालेज की स्थापना हुई थी। उसमें राजेन्द्र बाबू सम्मिलित नहीं हुए, पर उसकी कार्यप्रणाली की ओर आपका बराबर ध्यान रहा और उसका
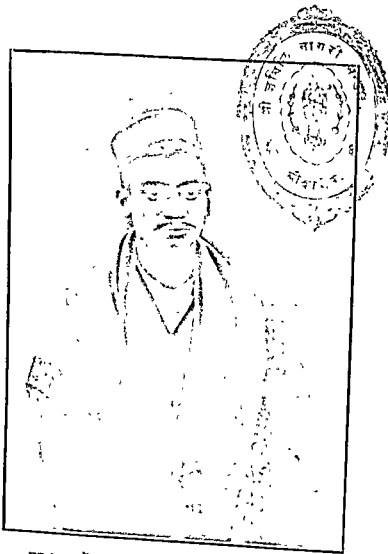
सन १९०७ में एम० ए० में पढ़ते समय बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी

असर आपके दिल पर खासा पड़ा। विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद पटना युनिवर्सिटी के आन्दोलन में पड़ना, और युनिवर्सिटी कायम होने पर उसके सिनेट और सिन्डिकेट का सदस्य होकर उसे राष्ट्रीय ढंग पर चलाने का प्रयत्न करना, तथा पीछे असहयोग काल में विहार प्रान्त के अन्दर राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार में इतना तल्लीन होना उसी समय के संस्कार का फल कहा जा सकता है। उन दिनों ही राजेन्द्र बाबू के रहन सहन, चाल ढाल, सुतीक्ष्ण बुद्धि एवं सार्वजनिक कार्य की ओर लगन देख कर बड़े बड़े लोग आपकी प्रशंसा किया करते थे। सिस्टर निवेदिता तो आपकी बड़ी ही तारीफ करती थीं। वह आपके बारे में अक्सर कहा करती थीं कि He is the future leader of India—ये भारत के भावी नेता हैं। सिस्टर निवेदिता की यह भविष्यवाणी आज सत्य निकली।

सन १९०६ में बी. ए. पास करने के बाद बाबू राजेन्द्र प्रसादजी ने एम. ए. में नाम लिखाया। एम. ए. में आपने अंगरेजी ली। उन दिनों एम. ए. का कोर्स करीब डेढ़ वर्ष का था। एम. ए. पढ़ने के साथ साथ आपने कानून पढ़ना भी शुरू किया। उस समय ला (Law) कालेज अलग नहीं था, अन्य कालेजों में ही कानून की पढ़ाई होती थी।

ज्योतिषी का भविष्य कथन

बी. ए. पास करने के बाद बा० राजेन्द्र प्रसादजी का इंगलैण्ड जाकर बैरिस्ट्री पढ़ने का विचार हुआ। आपने एम. ए. में

तो नाम लिखा लिया, पर इंगलैण्ड जाने की धुन बनी रही। इंगलैण्ड जाने और वहां पढ़ने के खर्चवर्च का आप बन्दोवस्त करने लगे। विद्यार्थी अवस्था में भी आप विहार के एक अनमोल रत्न थे। आपने अन्य प्रान्तों के बीच विहार का सर ऊंचा किया था, आप विद्यार्थियों के शिरमौर थे, आपके जैसे अद्भुद् प्रतिभा वाले विद्यार्थी को भला विदेश जाकर शिक्षा प्राप्त करने के लिये सहायता मिलनी कौन सी बड़ी बात थी। आप इंगलैण्ड जाने की तैयारी करने लगे, पर घरवालों को इसकी सूचना तक नहीं दी। हां, सन १९०६ के अक्टूबर में आपने अपने बड़े भाई वा० महेन्द्र प्रसाद जी को खत लिखा और अपने इंगलैण्ड जाने का इरादा वताया। राजेन्द्र वावू सार्वजनिक चन्दे से पढ़ने के लिये इंगलैण्ड जाना पसन्द नहीं करते थे, क्योंकि सदा के लिये किसी के एहसान के नीचे दवा रहना आप नहीं चाहते थे। आपका विचार था कि आप इंगलैण्ड तभी जा सकते हैं जब कोई जाती जमानत पर इस शर्त पर रुपया दे कि लौट कर आने पर जब आप रुपया वापस करने योग्य हो जायं तो रुपया वापस ले ले। अपने लिये पिता के सर पर कर्ज का भारी वोझ लादना भी आपको पसन्द नहीं था। लेकिन महेन्द्र वावू माता पिता के अनजाने भी रुपया वन्दोवस्त करने को मुस्तैद थे। उनकी इच्छा थी कि राजेन्द्र वावू इंगलैण्ड जाकर आई. सी. एस. पढ़ें, वैरिस्ट्री पढ़ना उन्हें पसन्द नहीं था। वावू राजेन्द्र प्रसादजी ने इंगलैण्ड जाने का इरादा पक्का कर लिया। आप कपड़े वगैरह बनवा कर विल्कुल तैयार हो गये। इस सम्बन्ध

में एक बड़ी मनोरंजक बात हुई। जिन दिनों आपके इंगलैण्ड जाने की बात हो रही थी उन्हीं दिनों एक ज्योतिषी से कलकत्ते में आपकी मुलाकात हुई। आपने ज्योतिषी से अपने इंगलैण्ड जाने के बारे में पूछा। उस वक्त आपके क्लास के साथी बाबू सुखदेव प्रसाद वर्मा, जो आज पटना हाईकोर्ट के जज हैं, उस जगह मौजूद थे। राजेन्द्र बाबू का हाथ देख कर ज्योतिषी ने तुरत कह दिया कि आप तो अभी इंगलैण्ड नहीं जा रहे हैं, आपके इंगलैण्ड जाने में अभी बहुत देर है। बा० सुखदेव प्रसाद वर्मा को देख कर ज्योतिषी ने कहा कि इंगलैण्ड तो अभी ये जा रहे हैं। ये बातें सुनकर लोगों को बड़ी हँसी आयी। राजेन्द्र बाबू इंगलैण्ड जाने को बिलकुल तैयार हो चुके थे, कपड़ेलत्ते भी बनवा चुके थे और सुखदेव बाबू के इंगलैण्ड जाने की कोई बात भी नहीं थी। ज्योतिषी की बातों ने लोगों को हैरत में डाल दिया। लेकिन आखिर उसीकी बातें अक्षरशः ठीक हुईं।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के घरके लोगों को जब राजेन्द्र बाबू के इंगलैण्ड जाने की बात मालूम हुई तो वे लोग बहुत दुखित हुए। आपको इंगलैण्ड भेजने में विशेष हाथ बिहार के अग्रगण्य नेता बा० ब्रजकिशोर प्रसाद जी का था। वे ही आपके प्रमुख सहायक थे। एक बार राजेन्द्र बाबू उनके साथ रुपये पैसे के बन्दोबस्त में इलाहाबाद गये थे। घरवालों ने समझा कि आप इंगलैण्ड ही जा रहे हैं, इसलिये आपकी माता तथा घर के और लोग

इलाहाबाद पहुंच गये, किन्तु तव तक राजेन्द्र वावू कलकत्ता लौट गये थे, इसलिये वेलोग इलाहावाद से घर वापस आये। राजेन्द्र वावू के मातापिता नहीं चाहते थे कि राजेन्द्र वावू इंगलैण्ड जायं। उस समय राजेन्द्र वावू के पिता जी वृद्धावस्था में रोगग्रस्त हो कर खाट पर पड़े थे, अवस्था दिनोंदिन खराव होती जारही थी। इस मृत्युकाल में पुत्र का वियोग उन्हें असह्य था। मा भी राजेन्द्र बाबू को छोड़ने को तैयार नहीं थीं। आखिर आप अपने पिता की अवस्था सुधरने की उमीद से रुके रहे, परन्तु अवस्था सुधरी नहीं, सन १६०७ के मार्च में उनका देहान्त हो गया। तव तो राजेन्द्र बाबू का इंगलैण्ड जाना और भी मुश्किल हो गया, इस विपत्ति की अवस्था में माता को यों छोड़ कर इंगलैण्ड चला जाना आपके लिये सम्भव नहीं हुआ। अन्त में इंगलैण्ड जाने का विचार निश्चित रूप से छोड़ ही देना पड़ा। आपके न जाने पर बा० सुखदेव प्रसाद वर्मा ने इंगलैण्ड जाने का इरादा किया। इसपर आपने अपनी जाती जमानत पर कर्ज लिये हुए रुपये सुखदेव वावू को दे दिये, जिन्हें पीछे सुखदेव वावू के पिता जी ने आपको वापस कर दिये। राजेन्द्र वावू से रुपये और आपके अपने लिये वनवाये हुए कपड़ेलत्ते लेकर वावू सुखदेव प्रसाद वर्मा पढ़ने के लिये इंगलैण्ड चले गये और राजेन्द्र वावू यहीं रह गये। इस तरह ज्योतिषी की वात ठीक निकली, राजेन्द्र वावू उस समय तो इंगलैण्ड नहीं जा सके, पर वहुत वर्षों के पश्चात, जैसा कि ज्योतिषी ने कहा था, आप सन १९२८ में इंगलैण्ड गये।

इंगलैण्ड जाने की बात बन्द हो गयी और बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी ने कलकत्ते में अपना पढ़ना जारी रखा सही, किन्तु आपमें अन्यमनस्कता बहुत आ गयी, इससे पढ़ाई में बड़ी नुकसानी पहुँची। सार्वजनिक कामों में आप बहुत वक्त देने लगे। उन दिनों बंगाल में बंगभंग और स्वदेशी आन्दोलन बहुत जोरों पर था। राजेन्द्र बाबू अपनेको आन्दोलन से अलग न रख सके। आपने बहिष्कार आन्दोलनमें बहुत भाग लिया, स्वदेशी के प्रचार में आप मुस्तैदी से लग गये। स्वदेशी का व्रत तो आपने सन १८९९ में ही लिया था। तभी से बराबर आप बड़ी दृढ़ता के साथ इस व्रत को निबाहते रहे। कपड़े के अलावे अन्य वस्तुएं भी, जहांतक मिलना सम्भव होता था, आप स्वदेशी ही व्यवहार करते थे। यहां तक कि आपने कभी किसी युनिवर्सिटी परीक्षा में विदेशी नीब से लिख कर परीक्षा नहीं दी। हां, इन्ट्रेन्स की बात ठीक ठीक नहीं बतायी जा सकती है।

आखिर सन १९०७ के दिसम्बर में बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने एम. ए. परीक्षा दी। परीक्षा तो आपने दी, पर अपने पहले का स्थान आप प्राप्त नहीं कर सके। इधर इतना सार्वजनिक कार्य और उधर एम. ए. की पूरी तैयारी—दोनों साथ साथ कैसे हो सकता था। इसके अलावे कुछ वर्षों से परीक्षा पर से आप का विश्वास उठ गया था और परीक्षा के लिये विशेष पढ़ने में आपका मन नहीं लगता था। खैर, पास तो आप कर गये पर इस बार सदा की तरह आप सर्व-प्रथम नहीं हो सके। आपको

द्वितीय श्रेणी और पांचवां स्थान मिला। एम. ए. के साथ साथ आप कानून भी पढ़ रहे थे, पर इस वर्ष कानून की परीक्षा आपने नहीं दी। कानून की परीक्षा बहुत दिनों के बाद आप १९१० ई० में दे सके। सन १९०७ में आपने एम. ए. की परीक्षा देकर अपना विद्यार्थी जीवन समाप्त किया और फिर सांसारिक जीवन में प्रवेश कर गये।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के कालेज के साथियों में कितने ही नामी व्यक्ति हुए। बंगाल के सुप्रसिद्ध नेता स्व० श्री जे. एम. सेनगुप्त आपके क्लास के साथी थे। एफ. ए. में दोनों साथ पढ़ते थे, पर बी. ए. में श्री सेनगुप्त विज्ञान विभाग में चले गये और आप कला विभाग में। सुप्रसिद्ध विद्वान श्री विनय कुमार सरकार आपके कालेज के साथी हैं। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध सेठ श्री देवीप्रसाद खेतान भी आपके साथी हैं। जिन दिनों राजेन्द्र बाबू कलकत्ते में पढ़ते थे उन दिनों विहार के बहुत से विद्यार्थी वहां कालेज में थे, जिनमें से कितनों ने आज नामवरी हासिल की है। इनमें दर्शनकेसरी स्व० पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद, स्व० बाबू हरेकृष्ण प्रसाद, जस्टिस सुखदेव प्रसाद वर्मा, बाबू रामानुग्रह नारायण, प्रो० बद्रीनाथ वर्मा, श्री बलभद्र प्रसाद ज्योतिषी, बा० अनन्त प्रसाद, बा० शिवेश्वर दयाल, बा० नवलकिशोर प्रसाद न. १, और बा० श्रीकृष्ण प्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

—◆◆●◆◆—

संसार प्रवेश
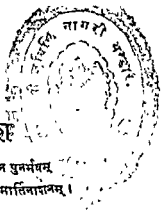
न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्
कामये दुःखतप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम्।

प्रोफेसरी

युनिवर्सिटी में लगातार इन्ट्रेन्स, एफ. ए. और बी. ए. में सर्व-प्रथम होते रहने के कारण बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी का नाम बहुत मशहूर हो गया था। आपकी प्रखर प्रतिभा पर सभी चकित थे। एम. ए. पास करते ही कालेज में अध्यापक पद ग्रहण करने का आपसे आग्रह होने लगा। उन दिनों मुजफ्फरपुर के भूमिहार ब्राह्मण कालेज में कुछ अच्छे प्रोफेसरों की नितान्त आवश्यकता थी, इसके लिये अधिकारीगण उससे सख्त तकाजा कर रहे थे। उस समय युनिवर्सिटी कमिशन की सिफारिश के अनुसार युनिवर्सिटियों का नया एक्ट बना था, युनिवर्सिटियां नये एक्ट के मुताबिक सभी कालेजों को सुधारना चाहती थीं। जो कालेज उस एक्ट के अनुसार अपनी अवस्था सुधारने को तैयार नहीं था उसकी मंजूरी छीन ली जाने का बड़ा डर था। मुजफ्फरपुर कालेज के प्रबन्धकर्त्ताओं को भी भय हो रहा था कि कहीं सुयोग्य अध्यापकों की कमी से कालेज की मंजूरी छीन न ली जाय। उस समय बाबू वैद्यनाथनारायण सिंह, जिन्होंने पीछे राजेन्द्र बाबू के साथ एम. एल. पास किया, मुजफ्फरपुर कालेज में प्रोफेसर थे और साथ ही कचहरी में वकालत भी करते थे।

स्वनामधन्य नेता श्री गोपालकृष्ण गोखले ने बम्बई में सर्वेन्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी (भारतसेवक समिति) की स्थापना की थी। वे इस सोसाइटी में हर प्रान्त के ऐसे चुने-चुनाये दो-चार लोगों को सम्मिलित करना चाहते थे जो अपना सारा जीवन देश सेवा में देने के लिये तैयार हों। उस समय स्व० श्री परमेश्वर लाल जी विहार के राष्ट्रीय दल के एक नेता थे और कलकत्ते में बैरिस्ट्री कर रहे थे। गोखले जी से उनको पूरा परिचय था। गोखलेजी ने उनसे विहार से दो एक सुयोग्य होनहार युवक देने के लिये कहा। उस समय भी राजेन्द्र वावू विहार के एक अनुपम रत्न समझे जाते थे। श्री परमेश्वर लाल जी को आपसे अच्छा आदमी कौन मिल सकता था ? झट उन्होंने राजेन्द्र वावू के नाम का प्रस्ताव कर दिया, और राजेन्द्र वावू से आकर कहा कि श्रीमान गोखले तुमसे मिलना चाहते हैं। इनके कहने पर जब राजेन्द्र वावू गोखले जी से मिले तो उन्होंने सोसाइटी में शामिल होने का अपना प्रस्नाव राजेन्द्र वावू के सामने रखा और सारी हालत कह सुनायी। राजेन्द्र वावू ने उस वक्त कोई जवाव नहीं दिया, कहा कि सोच कर पीछे उत्तर दूंगा। आखिर राजेन्द्र वावू इस प्रस्ताव पर विचार करने लगे और लगातार कई सप्ताह तक विचार करते रहे।

वावू राजेन्द्र प्रसाद जी का तो वचपन से ही दीनदुखियों की सेवा की ओर झुकाव था, आपने लोकसेवा ही अपने जीवन का उद्देश्य वना रखा था। आपकी कभी यह इच्छा नहीं थी कि मैं वड़ा ओहदा पाऊं और प्रचुर धन इकट्ठा करूं। हमेशा

आपका सादा जीवन रहा, उच्च विचार रहे। आप अक्सर अपनी माता से कहा करते थे—मां, मुझसे यह उमीद न रखो कि मैं पढ़ लिख कर बहुत रुपया कमाऊंगा, मेरा मार्ग कुछ और ही होगा। श्रीयुत गोखले जी ने आकर आपकी इन पवित्र भावनाओं को और भी प्रखर कर दिया। आप संसार के दुखी जीवों की सेवा करने को विह्वल हो उठे। ज्यों ज्यों आपने इस सम्बन्ध में विचार किया त्यों त्यों विचार दृढ़ होता गया। आखिर आप अपने को नहीं रोक सके। आपने अपने बड़े भाई बा० महेन्द्र प्रसाद जी से, जो संयोगवश उस समय किसी काम से कलकत्ते गये हुए थे और आपके पास ठहरे हुए थे, अपना विचार प्रगट करना चाहा। आपने एक लम्बा पत्र लिख कर उसमें अपने मन की सारी भावनाएं अंकित की और वह पत्र वहीं अपने भाई को दिया। उस पत्र की सही नकल नीचे दी जाती है। उससे पाठक समझ सकेंगे कि राजेन्द्रबाबू के जो आज विचार हैं वे कुछ नये विचार नहीं हैं। कुछ लोग समझते हैं कि महात्मा गांधी की जादू की छड़ी ने राजेन्द्र बाबू को साधु बना दिया है, लेकिन ऐसी बात नहीं है। हां, महात्मा गांधी के सत्संग और सदुपदेश से आपका चरित्र और भी निर्मल हुआ है, आत्मा और भी पवित्र बनी है, आप अपनेको और भी ऊपर उठा सके हैं और अपनी मनोगत भावनाओं को व्यावहारिक रूप दे सके हैं, इसमें सन्देह नहीं। नीचे जो चिट्ठियां दी जाती हैं उनसे बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के सम्बन्ध में सभी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। आपने अपने भाई साहब को जो पत्र लिखा वह यह है:—

have some little property at home. If I earn, I know, I shall make some money, and will also perhaps be able through it, to raise the status of our family in the so-called society, where a man is great because of his long purse and not for a magnanimus heart. But in this transitory world all passes away—wealth, rank, honour. The wealthier you become, the more you require, and although people may think that they are satisfied with gold, those who know anything know very well, that happiness comes not from without but from within. A poor man with his few rupees is more contented than the rich man with his millions. Let us then not despise poverty. The greatest men of the world have been the poorest, at first the most persecuted and the most despised. But the scoffers and the persecutors are gone into dust, no more to rise, no more to be heard of, while the persecuted and despised live in the memory and the heart of millions. So care not for the scoffs and contempt of the so-called social people, who have not got that magnanimity of mind and soul, which enables a poor man to look down upon them with the feeling of pity rather than of contempt.

You may rest assured my dear, that if I have had any ambition in my life it has been to be of

some service to the country. It may be that it is due to the fault of my training, but you might remember that you were the first to instil into my minds these noble thoughts, these high sentiments. When there was a talk of my going to England I donot know what you thought or felt, but I was never enamoured of the I. C. S., because I felt that my activities will be greatly circumscribed. That was an occasion when I opened my heart to you and yours also opened in response. Here is another such occasion, be manly and consent to my taking the course I propose to take. If however I come to know that you are not willing, I shall only be sorry but not surprised. I believe you all look upon me as the future breadwinner of the family. Well, if you love me only for that—and my heart breaks to think if any thing so sordid and mean in your relation—I do not know what to say. Do not pray disappoint me and do not force me to prove untrue to myself. One who is not true to himself can never be true to any one else. If you check me the rest of my life will be miserable; my success, too, in the profession which you have chosen for me, will be doubtful and it is not making me miserable that you can ever think of. I was talking of ambition. Ambition I have none except to be of some service to the mother.

But supposing I had any, what field is there for my ambition in the High Court. I know I shall earn a few hundred rupees a month—it may even be in thousands that I shall earn, but are not there innumerable men with their thousands and lacs and crores, whom no one cares for and whom even some of us cannot but pity? But look, on the other hand, at the vast field, what prince or commoner is there who has the influence, the position or the honour of a Gokhale? And is he not after all a poor man? Are we poorer than his family? If millions can manage with two or three rupees a month, why can we not with as many hundreds? There will be a vast field for our ambition. Think of that also—and let me depart in peace. Yours will be the sacrifice and yours too the glory.

Now looking at the question of ways and means, I shall not require you to give me any thing for my support. I shall get that from the Society. I shall get some thing also for the maintenance of the family which I shall remit to you. It will hardly be any relief to you, but still it may be of some little use, and you will have to be content with thirty where you expected three thousands. The Society provides also something for the education of the children. I will not trouble

you, therefore, with finding means for their education. I shall take care of them and educate them.

Think of it, my brother, and let me know. I have devoted 20 days' constant thought to it, and have come to the conclusion that all the so-called social honour, rank and position are shams—a man's greatness does not consist in the length of his purse, but in the magnanimity of his heart, and I am sure you have a heart as magnanimous as any that beat in the world. Approach this question, again, from another point of view. Suppose I am struck dead by plague this day, will you not have to manage the family and its affairs with what you have got? Will you not then be forced to be contented with your lot? If there is any divinity in man—as I believe there is—should he not willingly consent to what he may be forced to submit? If Providence forces you to be without me—you cannot but submit: show therefore, the magnanimity of an angel by courting poverty and for a time social degradation. Show that man has a free will and magnanimous heart—and prove to the world that it is not yet altogether devoid of noble minds. Prove that there are men to whom money is trash—to whom service is all in all. Earn the gratitude of millions—and, last though not the least, of your nearest and dearest.

I am writing to my wife also about it. I can not write to mother. This may prove a shock to her old age.

Yours affectionately

Rajendra Prasad.

इस पत्र का हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जाता है। पर अनुवाद में भाषा और भावों का वह सौन्दर्य्य नहीं लाया जा सकता जो मूल में है। फिर भी जहांतक हो सका चेष्टा की गयी है।

१-३-१०

मंगलवार

मेरे प्यारे भैया,

आप एक ऐसे व्यक्ति के पत्र को पाकर आश्चर्य्यचकित होंगे जो यहां आपके साथ रातोदिन बिता रहा है। कुछ बातें हैं जो मुझे आपको लिखने को बाध्य करती हैं। मैंने अनेक बार अपने मन की बातें आपसे कहने का विचार किया, पर एक भावावेशपूर्ण व्यक्ति होने के कारण मैं आमने सामने आपसे बातें नहीं कर सका। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि मैं इस पत्र में जो कुछ कहने जा रहा हूँ वह बिना पूरा पूरा विचारा हुआ नहीं है।

आपको याद होगा कि करीब २० दिन पहले मैं माननीय गोखले जी से मिलने गया था। मेरे सामने उन्होंने सर्वेन्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी में सम्मिलित होने के लिये प्रस्ताव रखा। तब से इस प्रस्ताव की व्यावहारिकता के सम्बन्ध में मेरा दिमाग चक्कर खा रहा है। इसपर

लगातार २० दिनों तक सोचते रहने के बाद मैं समझता हूं कि मेरे लिये यही अच्छा होगा कि मैं अपने भाग्य को देश के साथ मिला दूं। मैं जानता हूँ कि मुझसे,—जिसपर परिवार की सारी आशायें केन्द्रीभूत हैं,— ऐसी बातें सुन कर आपके हृदय को एक भारी धक्का लगेगा। मैं यह भी जानता हूँ कि अगर मैं परिवार को अपने आप संभलने को छोड़ दूं तो परिवार भारी दिक्कतों में पड़ जायगा। लेकिन मेरे भैया, मैं एक उच्चतर और महत्तर पुकार भी अपने हृदय के अन्दर महसूस करता हूँ। आपको कठिनाई और विपत्ति में छोड़ देना मेरे लिये अकृतज्ञता हो सकती है, पर मुझे आशा है यह झगड़े का कारण नहीं होगा। मुझे विश्वास है कि हमलोगों का एक दूसरे के लिये स्नेह और प्यार जरा जरा सी असुविधाओं को जीतने के लिये पर्याप्त प्रबल और पर्याप्त महान है। मुझे विश्वास है कि मैं जो आपको प्यार करता हूं वह इसलिये नहीं कि आप पारिवारिक कार्यों का प्रबन्ध और हमलोगों की सहायता कर रहे हैं। मैं यह भी निश्चित मानता हूँ कि आप भी मुझे जो प्यार करते हैं वह इसलिये नहीं कि आप परिवार के लाभ के लिये कुछ कमाने की मुझ से आशा रखते हैं। हमलोगों का प्रेम एक अधिक ठोस नींव पर स्थित है और एक दूसरे के मनमानापन के कारण कितनी ही असुविधाएं और तकलीफें हमलोगों को क्यों न उठानी पड़े, हमारे परस्पर के प्रेम में कुछ कमी नहीं आयगी, बल्कि मेरा झुकाव तो इस बात पर विश्वास करने की ओर है कि वह और भी दृढ़ तथा टिकाऊ होगा। इसलिये मैं आपके सामने प्रस्ताव रखता हूं कि ३० कोटि के हितार्थ आप मुझे उत्सर्ग करें। श्रीमान गोखले जी की सोसाइटी में सम्मिलित होना मेरे लिये कोई व्यक्तिगत त्याग की बात नहीं है। भले के लिये हो या बुरे के लिये, मुझे इस तरह की

शिक्षा पाने का लाभ प्राप्त हुआ है कि मैं जैसी भी परिस्थिति में पड़ जाऊं मैं अपनेको उसीके अनकूल बना ले सकता हूँ। मेरा रहनसहन भी ऐसा सीधासादा रहा है कि मुझे आराम के लिये किसी खास तरह के सरोसामान की जरूरत नहीं पड़ सकती। सोसाइटी से जो कुछ मुझे मिलेगा वही मेरे लिये काफी होगा। पर मैं यह कह कर अपनेको झूठमूठ भुला नहीं सकता कि यह आपके लिये कोई त्याग नहीं होगा। आप सभी, जो मुझपर बड़ी बड़ी आशाएं बांधते आ रहे हैं, देखेंगे कि एक क्षण में सारी आशाएं ढह कर मिट्टी में मिल गयी हैं। आप सभी अपनेको एक अथाह समुद्र में पड़े हुए पावेंगे, और यह नहीं समझ सकेंगे कि अब क्या करना चाहिये। लेकिन, मेरे भैया, याद रखें हमलोगों के घर पर थोड़ी सी जायदाद है। यदि मैं कमाऊं तो, मैं जानता हूँ कि, मैं कुछ रुपया हासिल कर सकूंगा और शायद इसके द्वारा मैं उस तथाकथित समाज में अपने परिवार का दरजा ऊंचा करने में भी समर्थ होऊंगा जहां लोग अपनी लम्बी थैली (प्रचुर धन सम्पत्ति) के कारण ही बड़े गिने जाते हैं, अपने विशाल हृदय के कारण नहीं। पर इस क्षणभंगुर संसार में सम्पत्ति, पद, मर्य्यादा सभी नष्ट हो जाते हैं। लोग जितने ही धनी होते जाते हैं उतनी ही उनकी आवश्यकता भी बढ़ती जाती है। लोग समझ सकते हैं कि धन पाकर हम संतुष्ट होंगे पर जिन्हें कुछ भी ज्ञान है वे अच्छी तरह जानते हैं कि सुख वाह्य करणों से नहीं मिलता, बल्कि वह हृदय की उपज है। एक गरीब अपने थोड़े रुपये से अधिक संतुष्ट रहता है बनिसबत एक अमीर आदमी के, जिसके पास लाखों रुपये रहते हैं। ऐसी अवस्था में दरिद्रता को तुच्छ नहीं समझना चाहिये। दुनिया के महापुरुष पहले महा

दरिद्र ही रहे हैं, वे आरम्भ में खूब सताये गये हैं और नीची नजर से देखे गये हैं। पर हँसी उड़ानेवाले और सतानेवाले धूल में मिल गये, वे अब कभी उठ नहीं सकते, और न उनका नाम अब सुना जा सकता है, पर उनके निर्यातन और उपहास के पात्र लाखों मनुष्यों की स्मृति में—लाखों के हृदयों में आज भी वास कर रहे हैं। अतएव उन तथाकथित सामाजिक व्यक्तियों के उपहास और घृणा की परवाह न करें, जिनकी आत्मा और हृदय में वह विशालता नहीं है जो गरीब आदमियों को उन्हें घृणा से नहीं बल्कि दया के भावों से देखने की शक्ति देती है।

मेरे भैया, आप विश्वास रखें यदि मेरे जीवन में कोई महत्वाकांक्षा है तो वह यह कि मैं कुछ देश की सेवा में काम आ सकूँ। हो सकता है कि यह मेरी शिक्षा का दोष हो, पर आपको याद होगा—आपने ही पहले पहल इन सुन्दर भावों को, इन उच्च विचारों को मेरे मन में आरोपित किया था। जब मेरे इंगलैण्ड जाने की बात हो रही थी, मैं नहीं जानता कि उस वक्त आप क्या सोचते थे या क्या महसूस करते थे; पर मेरी तो आई. सी. एस. की ओर कभी आसक्ति नहीं थी, क्योंकि मैं अनुभव करता था कि इससे मेरी कार्यशीलता बहुत संकुचित हो जायगी। वह एक अवसर था जब मैंने अपना हृदय आपके सामने खोल कर रख दिया था और उसके उत्तर में आपका हृदय भी खुल गया था। वैसा ही यह दूसरा अवसर है, साहस करें और जो मार्ग मैं पकड़ना चाहता हूँ उसपर चलने में आप अपनी सहमति दें। पर यदि मुझे मालूम हो कि आप सहमति देना नहीं चाहते तो मैं केवल दुखी होऊंगा, लेकिन इसपर मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। मुझे विश्वास है कि आप

सभी मुझे परिवार के लिये आगे का रोटी कमानेवाला समझते हों, अगर आप मुझे केवल उसके लिये ही प्यार करते हैं—और सोच कर ही मेरा कलेजा टूक टूक हो जाता है कि हमारे सम्बन्ध ऐसी नीचता और तुच्छता है—तो मैं नहीं जानता कि क्या जाय। कृपया मुझे हताश न करें और मुझे अपने प्रति झूठा न होने दें। जो अपने प्रति सच्चा नहीं है वह किसी दूसरे प्रति कभी सच्चा नहीं हो सकता। यदि आप मुझे रोक रखेंगे मेरा शेष जीवन बड़ा दुखमय हो जायगा, आपने मेरे लिये जो चुन रखा है उसमें सफलता प्राप्त करना भी सन्देहजनक हो जायगा मुझे दुखी बनाना आपका कभी अभिप्राय हो नहीं सकता। अभी महत्वाकांक्षा की बात कर रहा था। मेरी कोई म... ...क्षा नहीं है, सिवाय इसके कि मैं माता की कुछ सेवा के काम सकूं। पर मान लिया जाय कि अगर मेरी कोई महत्वाकांक्षा भी होती तो, हाईकोर्ट में मेरी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिये क... क्षेत्र है। मैं जानता हूँ कि मैं प्रति मास कई सौ रुपये कमाऊंगा —कई हजार रुपये महीने भी हो सकते हैं—पर क्या दुनियां ऐसे अनगिनत व्यक्ति नहीं हैं जिनके पास हजारों, लाखों औ करोड़ों की पूंजी है पर जिनकी कोई परवाह नहीं करता, और जिन्हें हममें से भी कुछ लोग दया के अतिरिक्त और किसी । से नहीं देख सकते? पर दूसरी ओर सुविशाल क्षेत्र पर न डालें। कौनसा राजकुमार, कौनसा जनसाधारण है जिसे ... गोखले के समान प्रभाव, पद या मर्य्यादा प्राप्त हो? और क्या वे आखिर एक गरीब आदमी नहीं हैं? क्या हमलोग उनके परिवार से भी ज्यादा गरीब हैं? अगर लाखों व्यक्ति दो या तीन रुपये

महीने से काम चला लेते हैं तो हमलोग भला इतने सौ रुपये से क्यों नहीं चला सकते ? हमलोगों की महत्त्वाकांक्षा के लिये सुविशाल क्षेत्र होगा। उसपर भी ख्याल करें—और मुझे शांतिपूर्वक जाने दें। यह आपका ही त्याग होगा, आपका ही गौरव भी।

अब खर्चवर्च के प्रश्न पर विचार करें, मुझे अपने भरण पोषण के वास्ते आपको कुछ देने के लिये कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुझे यह सोसाइटी से मिल जायगा। परिवार पोषण के लिये भी मुझे कुछ मिलेगा जिसे मैं आपके पास भेज दिया करूंगा। इससे साहाय्य तो आपको मुश्किल से ही कुछ पहुंचेगा, परन्तु तौभी यह कुछ काम का हो सकता है, और आपको तीस से सन्तोष करना होगा जहां आप तीन हजार की उमीद करते थे। सोसाइटी बालबच्चोंकी शिक्षा के लिये भी कुछ देती है। अतएव मैं आपको उनसबों की शिक्षा के लिये प्रबन्ध करने की तकलीफ नहीं दूंगा। मैं उनकी खुद खबर लूंगा और उन्हें शिक्षा दूंगा।

मेरे भाई, इसपर विचार करें और अपनी राय बतावें। मैंने लगातार २० दिनों तक इसपर विचार किया है और अब इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि सभी तथाकथित सामाजिक मानमर्य्यादा और पद निःसार दिखावा है—किसी व्यक्ति का बड़प्पन उसके धन की इयत्ता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके हृदय की विशालता पर निर्भर करता है और मुझे विश्वास है कि आपका हृदय इतना महान है जितना दुनिया भर में हो सकता है। फिर दूसरी विचारदृष्टि से इस प्रश्न पर आइये। मान लीजिये आज मैं प्लेग से मर गया, तो क्या आपको परिवार और उसके कारबार को, जो कुछ आपके पास है

वकालत करते वक्त सन १९१५ में बा० राजेन्द्र प्रसाद जी एम. एल. की परीक्षा दी थी। इस परीक्षा के वक्त आपने ब परिश्रम किया था। परीक्षा के लिये आपने दो बार बहुत परि किया है, एक तो एफ. ए. की परीक्षा के समय, दूसरे एम. ए के परीक्षाकाल में। इस परीक्षा में आपके साथी गया जिला निवा स्व० बाबू वैद्यनाथनारायण सिंह थे। वे एक अत्यन्त परिश्र व्यक्ति थे। उन्हींके साथ साथ पढ़ने के कारण आपको भ विशेप मेहनत करनी पड़ती थी। वे राजेन्द्र बाबू से कहा कर थे कि आपने एम. ए. और बी. एल. की परीक्षा में जो अपन सुयश खो दिया है उसे इस अन्तिम परीक्षा द्वारा फिर प्रा कर लीजिये। राजेन्द्र बाबू को यह बात जंची और आ परिश्रम करने लगे। फलतः आप परीक्षा में प्रथम हुए औ प्रथम श्रेणी भी मिली। इस बार आपको इतना अधिक नम्ब आया कि शायद ही कभी किसीको इतना आया हो। वैद्यना बाबू भी प्रतिष्ठा के साथ पास कर गये। विहार में अबतक ये ही दो व्यक्ति एम. एल. हुए हैं। बंगाल में भी एम. एल. की संख्या अंगुली पर गिनने लायक है। वास्तव में यह बहुत कड़ी परीक्षा होती है और बहुत कम लोग इसमें शामिल होते हैं।

सन १९१६ तक बा० राजेन्द्र प्रसाद जी कलकत्ते में वकाल करते रहे। उसी साल मार्च में जब पटना हाईकोर्ट खुला तो आप यहीं वकालत करने चले आये और यहां आपने करी साढ़े चार वर्ष तक वकालत की। यहां भी आपकी वकाल

बाबू राजेन्द्र प्रसाद

बाबू बैद्यनाथ नारायण सिंह

एम० एल० की डिग्री लिये हुए

खूब चलने लगी और आपकी अच्छी आमदनी रही; परन्तु वकालत की आमदनी से कभी घरवालों को विशेष कुछ नहीं मिला। वकालत के समय आपके डेरे में बहुत से गरीब विद्यार्थी रहा करते थे, जिनका खानापीना और स्कूल के फीस वगैरह का खर्च आप ही दिया करते थे। आपका निवासस्थान देशसेवकों और साहित्यिकों का अड्डा बना रहता था। आपके रुपये सार्वजनिक कार्यों में ही खर्च होते थे। अपने लिये या अपने परिवार के लिये आपने कभी रुपये बचा नहीं रखे। आगे चलकर आपकी आमदनी करीब तीन हजार रुपया महीना हो गयी थी, लेकिन जिस दिन आपने वकालतखाना छोड़ा उस दिन आपके हिसाब में बैंक में १५) भी नहीं थे। अपने उपार्जित धनों का स्वयं उपभोग न कर सबको परोपकार में लगाना महात्माओं के लिये ही सम्भव है।

स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः,
पिबन्ति नाम्भः स्वयमेव नद्यः।
धाराधरो वर्षति नात्महेतोः,
परोपकाराय सतां विभूतिः॥

छात्र संगठन

जबतक न बच्चे देश के जाते सुधारे हैं सभी।
तबतक न सच्चा राष्ट्र का कल्याण हो सकता कभी॥

बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने राष्ट्रनिर्माण का कार्य उसी समय प्रारम्भ किया जब आप विद्यार्थी अवस्था में थे। जिस समय सारा बिहार प्रान्त गाढ़ी नींद में सोया था, उसी समय विद्यार्थी राजेन्द्र ने—एक बाइस वर्ष का युवक राजेन्द्र ने बिहार की विस्तृत भूमि में संगठन का वह बिगुल बजाया जिससे की मोहनिद्रा भंग हुई। विद्यार्थी राजेन्द्र जानता था कि का निर्माण तबतक नहीं हो सकता जबतक राष्ट्र के सुयोग्य नहीं बनाये जाते. उसे मालूम था कि आज के लड़के कल के नागरिक होंगे, उसे इस बात का ज्ञान था कि देश का भविष्य उस देश के छात्रों पर अर्थात् नवयु पर निर्भर करता है, वे ही उसकी आशा और भरोसा हैं, इसलिये उसने अपने प्रान्त के विद्यार्थियों का संगठन किया। उस समय तक विद्यार्थियों का इस तरह का संगठन [illegible]

करके सारे भारत को मार्ग दिखलाया, सबके सामने एक उदाहरण पेश किया। बहुत पिछड़े हुए प्रान्त में इस तरह के संगठन की बात सुन कर सब लोग चकित हो गये। धीरे धीरे इसके अनुकरण पर कई अन्य प्रान्तवासियों ने अपने यहां प्रान्तीय छात्र सम्मेलन कायम करना शुरू किया। हिन्दुस्तान की एक ओर से लेकर दूसरी ओर तक के क्या भारतीय और क्या एंगलो-इण्डियन सभी पत्रोंने बा० राजेन्द्र प्रसाद भी वगैरह के इस पथप्रदर्शक कार्य की प्रशंसा की थी। उस वक्त कलकत्ते से 'इण्डियन मिरर' नाम का एक अंगरेजी पत्र निकलता था। उसने लिखा था—

The students of Behar have set up with a practical programme for the furtherance of progress among them and they have given a lesson in this respect which the students of Bengal may do well to follow.

अर्थात्

बिहार के विद्यार्थियों ने अपने बीच उन्नति करने के लिये एक व्यावहारिक कार्यक्रम निश्चित कर लिया है, और उस सम्बन्ध में दूसरे को एक सबक सिखाया है जिसका अनुकरण कर बंगाल के विद्यार्थी लाभ उठा सकते हैं।

बम्बई के एंग्लो-इण्डियन पत्र 'इण्डियन स्पेक्टेटर' ने लिखा था—

While some students in Bengal are earning a notoriety for the exuberant display of animal spirit,

+ + + + इस पुस्तिका का भाषान्तर देशी भाषाओं में तैयार कर गांवगांव में बांटने चाहिये।" हिन्दी में यह पुस्तिका दो स्थानों से एक तो विहार चरखा संघ की ओर से और दूसरे प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन की ओर से प्रकाशित हुई है।

जिस समय राजेन्द्र बाबू कलकत्ते में आर्टिकिल्ड क्लर्क थे उस समय आपने अंगरेजी की दो किताबों के नोट लिखे थे, जिन्हें लोगोंने बहुत पसन्द किया और जिनकी बिक्री भी खूब हुई। अंगरेजी की ये दो किताबें थीं:—(1) Ancient Mariners और (2) English Seamen in the Sixteenth Century. आपके नाम से बहुत दिन पहले की एक स्कूल ट्रान्सलेशन की किताब भी छपी हुई है।

सन १९३० में जब बा० राजेन्द्र प्रसाद जी जेल गये थे तो आपने जेल में ही गांधीवाद के सम्बन्ध में एक सुन्दर पुस्तक लिखना आरम्भ किया था। वह पुस्तक अब भी अधुरी ही पड़ी है। राजनीतिक कार्यों में दिनरात लगे रहने के कारण आप अभी उसे पूरा नहीं कर सके हैं। कामों की हमेशे भीड़ लगी रहने के कारण आप पुस्तक लिखने में असमर्थ रहते हैं। यदि आपको कुछ भी अवकाश मिलता तो अबतक आपकी लेखनी से हमलोगों को बहुत सी उत्तमोत्तम पुस्तकें देखने को मिलतीं।

पटना हाईकोर्ट खुल जाने पर राजेन्द्र बाबू जब कलकत्ते से आकर यहीं वकालत करने लगे तो यहां आपने Patna Law ...

Weekly नाम का कानून सम्बन्धी एक साप्ताहिक पत्र निकाला। खुद आप और बाबू वैद्यनाथ नारायण सिंह उसके सम्पादक हुए। आप दोनों के परिश्रम से पत्र की अच्छी उन्नति हुई। आपने इसमें अपने रुपये भी बहुत लगाये; पर आपके राजनीतिक कार्यों में लग जाने तथा पीछे बाबू वैद्यनाथ नारायण सिंह की असामयिक मृत्यु के कारण यह पत्र बन्द हो गया।

बिहार के राष्ट्रीय अंगरेजी पत्र 'सर्चलाइट' के संस्थापकों में राजेन्द्र बाबू भी एक हैं। आप बराबर इसके डाइरेक्टर रहे हैं। इस पत्र की स्थापना सन १९१८ में हुई थी। यह द्विदैनिक पत्र है। सन १९३१ में कुछ समय के लिये यह दैनिक हो गया था। पहले इसके संचालन का भार मुख्यतः श्री हसन इमाम, श्री सच्चिदानन्द सिंह और बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी पर था। लेकिन अब तो यह एक तरह से कांग्रेस का पत्र हो गया है और इसकी रीतिनीति निर्धारित करने तथा खर्चवर्च के प्रबन्ध करने का भार मुख्यतः बाबू राजेन्द्र प्रसादजी पर है और इसके डाइरेक्टरों में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति आप ही हैं।

सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'देश' की स्थापना कर बा० राजेन्द्र प्रसादजी ने अपनी भाषा और राष्ट्र की एक बड़ी सेवा की। 'देश' की स्थापना सन १९१९ के सत्याग्रह की स्मृति में ६ अप्रिल सन १९२० को हुई थी। प्रारम्भ में बहुत दिनों तक राजेन्द्र बाबू खुद इसके प्रधान सम्पादक थे। आपके बाद पं० पारसनाथ त्रिपाठी और बा० मथुरा प्रसाद सिंह जी इसके सम्पादक हुए। पश्चात इस

के सम्पादक बा० बदरीनाथ वर्मा एम. ए. काव्यतीर्थ हुए। आपके परिश्रम से पत्र की अच्छी उन्नति हुई। बा० राजेन्द्र प्रसादजी समय समय पर इस पत्र में बराबर लेख लिखते रहे। इस समय यह पत्र आर्डिनेन्स के कारण बन्द है।

देशी भाषाओं में राजेन्द्र बाबू को गुजराती भाषा का साधारण ज्ञान है। बंगला तो आप खूब जानते हैं। लगातार करीब चौदह वर्षों तक बंगाल में रहने के कारण आपको बंगला सीखने का काफी मौका मिला। सन १९२३ में, जब आप कांग्रेस के प्रधान मंत्री थे, आपने कुछ दिनों तक बंगाल के गांवों में दौरा किया था। उस समय आपका भाषण बहुत स्थानों में बंगला में ही हुआ था। कितने ही बंगला पत्रों ने आपके बंगला भाषण की बड़ी प्रशंसा की थी।

विदेश भ्रमण

गुरवत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में ।
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा ॥

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी विदेशों में रह कर भी सदा अपनी मातृभूमि की चिन्ता में लगे रहे। भारत से बाहर आपको पहलेपहल लंका जाने का अवसर मिला। सन १९२७ के दिसम्बर में आप मद्रास कांग्रेस में शामिल होने के बाद वहांसे लंका देखने को गये थे। उन दिनों बौद्ध साहित्य के प्रामाणिक विद्वान बाबा रामोदार दास (अब राहुल सांकृत्यायन) लंका के विद्यालंकार कालेज में अध्यापक थे। उन्होंने आपका वहां स्वागत किया और आपको कलम्बो, काडी हरेलिया, सीतारालिया, दम्बुल, अनुराधपुर आदि लंका के प्रमुख स्थानों को दिखलाया। यहा बा० राजेन्द्र प्रसाद जी अनुराधपुर में सम्राट अशोक को पुत्री संगमित्रा द्वारा लगायी गयी बोधिवृक्ष की शाखा के नीचे हजारों वर्षों से जलते हुए दीपकों को देखकर बहुत प्रभावित हुए थे। उसी साल जब आप इंगलैण्ड गये तो इसके सम्बन्ध में आपने एक निजी पत्र में चर्चा की और चाहा कि जिस प्रकार लंका में अखंड रूप से दीपक जला करते हैं उसी प्रकार हमारे विद्यापीठों में भी अखंड रूप से कुछ चरखे चलते रहें। उस पत्र का वह अंश आगे दिया जाता है।

सन १९२८ में इंगलैण्ड में बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी

(War Resisters' International Conference)हो रहा था। दुनियाके भिन्न भिन्न भागों के प्रतिनिधिगण जुटे थे, श्री फेनर ब्राकवे उसके सभापति थे। हिन्दुस्तान की ओर से राजेन्द्र बाबू भी उसके एक प्रतिनिधि हुए और उस सम्मेलन में आपने भाषण किया।

युद्धविरोधी सम्मेलन के समाप्त होने के बाद सम्मेलन के सिद्धान्तों के प्रचार के लिये यूरोप के कई स्थानों में सभा करने का विचार किया गया। सम्मेलन के भिन्न भिन्न प्रतिनिधि भिन्न भिन्न स्थानों में भेजे गये। सम्मेलन के मन्त्री श्री रनहम ब्राउन तथा और कई प्रतिनिधियों के साथ बा० राजेन्द्र प्रसादजी अस्ट्रिया के ग्राज नामक स्थानों में भेजे गये। वहां महात्मा गांधीजी के परिचित प्रो० स्टैण्डिनाथ और उनकी धर्मपत्नी रहती थीं, इसलिये राजेन्द्र बाबू उन्हींके यहां जाकर टिके और श्री रनहम तथा दूसरे प्रतिनिधि किसी और जगह में ठहरे। बा० राजेन्द्र प्रसादजी प्रो० स्टैण्डिनाथ और उनकी पत्नी के साथ सभाभवन में निर्दिष्ट समय से कुछ पहले ही पहुंचे, उस वक्त तक और कोई वक्ता वहां नहीं पहुंचे थे। राजेन्द्र बाबू ने वहां जाकर देखा कि सभाभवन खचाखच भरा है, युद्ध के पक्षपाती लोग वहां सभा भंग करने के लिये सभी तरह के उपायों को काम में लाने को तैयार हैं, बहुतेरे लोग शराब पी रहे हैं और सिगरेट के धुएं से सारा कमरा काला हो रहा है। इन लोगों के वहां पहुंचते ही लोगों ने तालियां पीटना और शोर करना आरम्भ किया। प्रो० स्टैण्डिनाथ ने कहा कि यह रंग अच्छा नहीं है, यहांसे लौट चला जाय। इतने में कुछ

(War Resisters' International Conference)हो रहा था। दुनियाके भिन्न भिन्न भागों के प्रतिनिधिगण जुटे थे, श्री फेनर ब्राकवे उसके सभापति थे। हिन्दुस्तान की ओर से राजेन्द्र बाबू भी उसके एक प्रतिनिधि हुए और उस सम्मेलन में आपने भाषण किया।

युद्धविरोधी सम्मेलन के समाप्त होने के बाद सम्मेलन के सिद्धान्तों के प्रचार के लिये यूरोप के कई स्थानों में सभा करने का विचार किया गया। सम्मेलन के भिन्न भिन्न प्रतिनिधि भिन्न भिन्न स्थानों में भेजे गये। सम्मेलन के मन्त्री श्री रनहम ब्राउन तथा और कई प्रतिनिधियों के साथ बा० राजेन्द्र प्रसादजी अस्ट्रिया के ग्राज नामक स्थानों में भेजे गये। वहां महात्मा गांधीजी के परिचित प्रो० स्टैण्डिनाथ और उनकी धर्मपत्नी रहती थीं, इसलिये राजेन्द्र बाबू उन्हींके यहां जाकर टिके और श्री रनहम तथा दूसरे प्रतिनिधि किसी और जगह में ठहरे। बा० राजेन्द्र प्रसादजी प्रो० स्टैण्डिनाथ और उनकी पत्नी के साथ सभाभवन में निर्दिष्ट समय से कुछ पहले ही पहुंचे, उस वक्त तक और कोई वक्ता वहां नहीं पहुंचे थे। राजेन्द्र बाबू ने वहां जाकर देखा कि सभाभवन खचाखच भरा है, युद्ध के पक्षपाती लोग वहां सभा भंग करने के लिये सभी तरह के उपायों को काम में लाने को तैयार हैं, बहुतेरे लोग शराब पी रहे हैं और सिगरेट के धुएं से सारा कमरा काला हो रहा है। इन लोगों के वहां पहुंचते ही लोगों ने तालियां पीटना और शोर करना आरम्भ किया। प्रो० स्टैण्डिनाथ ने कहा कि यह रंग अच्छा नहीं है, यहांसे लौट चला जाय। इतने में कुछ

आदमी आप सबों को पीटने लगे। पहले तो घूसों से खूब मारा फिर कुर्सियां तोड़ कर उनके पाये से पीटना शुरू किया। मार डालो मार डालो की आवाज चारो तरफ से आने लगी, तीनों जनें खूब घायल हुए, खून टपकने लगा। उस अस्ट्रियन महिला ने जान पर खेल कर राजेन्द्र बाबू की रक्षा की। राजेन्द्र बाबू को सर में, ललाट में और हाथ में सख्त चोट पहुंची। एक बार तो छूरी भी चलायी गयी थी, पर उस वीर महिला ने छुरी पकड़ ली। इस तरह दोनों पतिपत्नी राजेन्द्र बाबू को बचा कर अपने घर लेआये और वहां मरहमपट्टी की। दूसरे दिन आपकी तबीयत अच्छी हुई तो आप फिर घूमने के लिये निकल पड़े, लेकिन जख्म करीब पन्द्रह बीस दिनों तक बना रहा। यह घटना १ अगस्त १९२८ को घटी थी। अस्ट्रियन पत्रोंने इस घटना पर बहुत खेद प्रगट किया था और बा० राजेन्द्र प्रसाद जी से इसके लिये माफी मांगी थी। इस घटना के सम्बन्ध में प्रो० स्टैन्डिनाथ की पत्नी ने महात्मा गांधी जी के पास एक पत्र भेजा था जिसका उद्धरण देते हुए महात्माजी ने ३० अगस्त १९२८ के *'यंग इण्डिया'* में एक अग्रलेख लिखा था। परन्तु उक्त अस्ट्रियन महिला के पत्र का कुछ अंश भ्रमात्मक है। इस घटना के बाद प्रो० स्टैण्डिनाथ और उनकी धर्मपत्नी दोनों भारतवर्ष आये थे और साबरमती आश्रम में कई महीनों तक ठहरे थे, जहां लेडी स्टैण्डिनाथ का नाम सावित्री देवी रखा गया था।

मरहमपट्टी लगाये प्रो० स्टैण्डिनाथ के यहांसे रवाना होकर राजेन्द्र बाबू स्वीटजरलैण्ड गये और वहां करीब चार पांच दिनों

तक घूमते रहे। आपने यहां जुरिच, प्राग, बर्न, विलेनेवा, जेनेवा, लूसर्न और रीगीकल्टबैड आदि स्थानों को देखा। स्विटजरलैण्ड में आपने श्री रोमारोलां से भेंट की, पर दोनों की बातचीत में बड़ी दिक्कत होती रही। श्री रोमारोला अंगरेजी नहीं जानते थे। उन्हें फ्रेंच, जर्मन, इटालियन और स्पेनिश की जानकारी थी। इधर राजेन्द्र बाबू को अंगरेजी के सिवाय दूसरी यूरोपियन भाषा का ज्ञान नहीं था; इसलिये एक अंगरेजी जानने वाली महिला की सहायता से ये लोग कुछ बातें कर सके। स्वीटजरलैण्ड के बाद राजेन्द्र बाबू फ्रांस की राजधानी पेरिस गये और वहांसे इंगलैण्ड लौट गये। इंगलैण्ड से आप स्काटलैण्ड की राजधानी एडिनबरा देखने गये। आपकी ख़ाहिश थी कि कुछ दिनों तक और रहकर रूस आदि देश भी देख लिये जायं, परन्तु हरिजी कुछ कारणों से यूरोप में और अधिक दिनों तक नहीं रहना चाहते थे, इसलिये उनके आग्रह से उनके साथ राजेन्द्र बाबू भी इंगलैण्ड से भारत के लिये रवाना हुए। हां, रास्ते में जिन देशों को आसानी से देख सकते थे देखते आये।

लंडन से चलकर बा० राजेन्द्र प्रसादजी हालैण्ड पहुंचे। यहां येर्डे नामक स्थान में विश्व युवक शान्ति सम्मेलन (The World Congress of the Youth for Peace) हो रहा था। यह सम्मेलन १७ से २६ अगस्त तक होता रहा। सभी देश के युवक लोग आये हुए थे। राजेन्द्र बाबू ने वहां भारत का प्रतिनिधित्व किया। वहां आपका भाषण भी हुआ।

में, पीछे महात्मा गांधी के पत्र 'हिन्दी
नवजीवन' के सम्पादक रहे। आपका विव
जी की कनिष्ठ पुत्री से हुआ है। वि
सर्वमान्य नेताओं में बा० व्रजकिशोर प्र
प्रसाद जी हैं, और दोनों बहुत दिनों से
आखिर दोनों का समधी हो जाना बड़े म
दोनों महानुभावों का सम्बन्ध जनक
याद दिलाता है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के परिवार में
पुत्रवधु के अतिरिक्त आपके बड़े भाई, उनके
विधवा बहन हैं। बड़े भाई बा० महेन्द्र
शिक्षाप्राप्त एक लोकप्रिय सज्जन हैं। अ
जनिक क्षेत्र में कार्य करते आये हैं। बिहार
आपका स्थान बहुत ऊंचा है। असहयोग यु
कार्यों में भी बहुत योग दिया करते थे।
उपाधि मिली थी, पर असहयोग काल में व
किया। समय समय पर कांग्रेस के कार्य
बटाते रहे हैं। स्वराज्यदल की ओर से
काउन्सिल आफ स्टेट के भी मेम्बर थे। बा०
लिये यह बड़े ही सुयोग और सौभाग्य की बा
सेवा में निरत रहनेवाले बा० महेन्द्र प्रसाद ज
मिले। बचपन से ही आप दोनों भाइयों में

बहुत कम भाइयों में देखा जाता है। बा० राजेन्द्र प्रसाद जी महेन्द्र बाबू को पिता तुल्य मानते हैं और इनके प्रति वैसी ही श्रद्धाभक्ति रखते हैं। महेन्द्र बाबू का भी राजेन्द्र बाबू के प्रति अपार स्नेह रहता है।

आप लोगोंकी साम्पत्तिक अवस्था साधारणतः अच्छी है। घर का भार प्रबन्धभार महेन्द्र बाबू पर रहता है। बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी को घर की किसी बात के लिये कभी कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती है। राजेन्द्र बाबू के वैयक्तिक खर्च का प्रबन्ध महेन्द्र बाबू ही करते हैं। आप नहीं चाहते कि राजेन्द्र बाबू राष्ट्रीय कोष से एक पैसा भी निजी खर्च के लिये लें। महात्मा गांधी तथा बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद जी वगैरह की राय नहीं थी कि महेन्द्र बाबू घर का खर्च सँभालने के अलावे राजेन्द्र बाबू का भी खर्च उठावें, जब कि राजेन्द्र बाबू घर के किसी काम से सरोकार न रख कर एक संन्यासी की तरह जनसेवा में लगे रहते हैं। पर महेन्द्र बाबू ने इस रायको नहीं माना। करीब पांच छः साल पहले की बात है कि महात्मा गांधी जी ने महेन्द्र बाबू को साबरमती आश्रम में बुलाकर कहा था कि अगर राजेन्द्र बाबू खानेपीने वगैरह का खर्च कांग्रेस से न लेकर घर से लेते रहे तो कांग्रेस के अन्य नेता, जो घरसे खर्च लेने में किसी कारण असमर्थ हैं, बहुत बुरी परिस्थिति में पड़ जांयगे इसलिये इन्हें अपने लिये कांग्रेस से खर्च लेने दो; किन्तु महेन्द्र बाबू राजी नहीं हुए।

थे, पीछे महात्मा गांधी के पत्र 'हिन्दी नवजीवन' में दो वर्ष तक सहकारी सम्पादक रहे। आपका विवाह बा० ब्रजकिशोर प्रसाद जी की कनिष्ठ पुत्री से हुआ है। बिहार के दो सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य नेताओं में बा० ब्रजकिशोर प्रसाद जी तथा बा० राजेन्द्र प्रसाद जी हैं, और दोनों बहुत दिनों से साथ काम करते आये हैं। आखिर दोनों का समधी हो जाना बड़े मजे की बात रही। आप दोनों महानुभावों का सम्बन्ध जनक और दशरथ का सम्बन्ध याद दिलाता है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी के परिवार में आपकी स्त्री, पुत्र और पुत्रवधु के अतिरिक्त आपके बड़े भाई, उनके बालबच्चे और एक बड़ी विधवा बहन हैं। बड़े भाई बा० महेन्द्र प्रसाद जी उच्च कोटि के शिक्षाप्राप्त एक लोकप्रिय सज्जन हैं। आप बहुत दिनों से सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करते आये हैं। बिहार के सार्वजनिक क्षेत्र में आपका स्थान बहुत ऊंचा है। असहयोग युग के पूर्व आप सरकारी कार्यों में भी बहुत योग दिया करते थे। आपको रायसाहब की उपाधि मिली थी, पर असहयोग काल में आपने इसका परित्याग किया। समय समय पर कांग्रेस के कार्यों में आप बराबर हाथ बटाते रहे हैं। स्वराज्यदल की ओर से आप कुछ वर्षों तक काउन्सिल आफ स्टेट के भी मेम्बर थे। बा० राजेन्द्र प्रसाद जी के लिये यह बड़े ही सुयोग और सौभाग्य की बात हुई कि सार्वजनिक सेवा में निरत रहनेवाले बा० महेन्द्र प्रसाद जी जैसे आपको भाई मिले। बचपन से ही आप दोनों भाइयों में जैसा प्रेम रहा है वैसा

बहुत कम भाइयों में देखा जाता है। बा० राजेन्द्र प्रसाद जी महेन्द्र बाबू को पिता तुल्य मानते हैं और उनके प्रति वैसी ही श्रद्धाभक्ति रखते हैं। महेन्द्र बाबू का भी राजेन्द्र बाबू के प्रति अपार स्नेह रहता है।

आप लोगोंकी साम्पत्तिक अवस्था साधारणत: अच्छी है। घर का सारा प्रबन्धभार महेन्द्र बाबू पर रहता है। बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी को घर की किसी बात के लिये कभी कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ती है। राजेन्द्र बाबू के वैयक्तिक खर्च का प्रबन्ध महेन्द्र बाबू ही करते हैं। आप नहीं चाहते कि राजेन्द्र बाबू राष्ट्रीय कोष से एक पैसा भी निजी खर्च के लिये लें। महात्मा गांधी तथा बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद जी वगैरह की राय नहीं थी कि महेन्द्र बाबू घर का खर्च सँभालने के अलावे राजेन्द्र बाबू का भी खर्च उठावें, जब कि राजेन्द्र बाबू घर के किसी काम से सरोकार न रख कर एक संन्यासी की तरह जनसेवा में लगे रहते हैं। पर महेन्द्र बाबू ने इस रायको नहीं माना। करीब पांच छः साल पहले की बात है कि महात्मा गांधी जी ने महेन्द्र बाबू को साबरमती आश्रम में बुलाकर कहा था कि अगर राजेन्द्र बाबू खानेपीने वगैरह का खर्च कांग्रेस से न लेकर घर से लेते रहे तो कांग्रेस के अन्य नेता, जो घरसे खर्च लेने में किसी कारण असमर्थ हैं, बहुत बुरी परिस्थिति में पड़ जांयगे इसलिये इन्हें अपने लिये कांग्रेस से खर्च लेने दो; किन्तु महेन्द्र बाबू राजी नहीं हुए।

बा० राजेन्द्र प्रसाद जी और आपके परिवार के लोग सन १९०० से स्वदेशी का व्रत लिये हुए हैं। उसी समय से आपके घर के सब लोग स्वदेशी वस्त्र पहनते हैं। छूआछूत का बखेड़ा भी आपलोगोंने तभी से हटाना शुरू किया था। सन १९०४ में गणित के सुप्रसिद्ध विद्वान बलिया निवासी डा० गणेश प्रसाद इंगलैण्ड से लौट कर आये थे, इस कारण लोगों ने उन्हें अपनी जाति से अलग कर दिया था और उनके साथ खानपान नहीं करते थे। इसपर बाबू व्रजकिशोर प्रसादजी ने नवयुवकों का एक दल संगठित कर छूआछूत के बखेड़े को हटा डा० गणेश प्रसाद के यहां भोजन करने का निश्चय किया। बस फिर क्या था, बा० महेन्द्र प्रसाद जी और बा० राजेन्द्र प्रसाद जी दोनों भाई इस काम में पड़ने को तैयार हो गये। सबलोग डा० गणेश प्रसाद के घर पर गये और वहां भोजन किया। अब तो बड़ा तहलका मचा। विहार तथा युक्तप्रान्त के भिन्न भिन्न स्थानों में खलबली पैदा हो गयी। काशी से पं० शिवकुमार शास्त्री बुलाये गये, छपरा और सिवान में बड़ी बड़ी सभाएं हुई और राजेन्द्र बाबू आदि के कार्य का जोरदार विरोध किया गया, परन्तु आपलोग बिलकुल डटे रहे। आपलोगों ने छूआछूत के विरुद्ध बड़े बड़े विद्वानों की राय तथा शास्त्रपुराणों के उद्धरण पर्चे के रूप में छपवा कर लोगों के बीच खूब बांटा। आखिर बात धीरे धीरे दब गयी और आपलोगों को किसी प्रकार का प्रायश्चित्त नहीं करना पड़ा। पत्रों में इन बातों की चर्चा खूब हुई थी। बड़े बड़े जबरदस्त बूढ़े पुरानों पर नवयुवकों की इस जीत को देखकर कलकत्ते के

'इण्डियन मिरर' नामक पत्र ने जिसके सम्पादक श्री नगेन्द्र नाथ सेन थे, इस विषय में एक बड़ी ही सुन्दर टिप्पणी लिखी थी। उस में लिखा था—The children of light have triumphed over the forces of darkness.

बा० राजेन्द्र प्रसादजी परदा प्रथा के विरोधी हैं, आपकी बड़ी खाहिश रही कि आपके घर की महिलाएं भी आपकी तरह लोकसेवा में लग जांय। इसके लिये आपने अपनी स्त्री और पुत्रवधु को साबरमती आश्रम में शिक्षा पाने केलिये भेजा। यह सन १९२८ की बात है। उसी साल आप इंगलैण्ड गये थे। वहांसे आपने अपने पुत्र बा० मृत्युञ्जय प्रसाद को लिखा :—

"मुझे यह पसन्द है कि तुम्हारी गैरहाजिरी में भी तुम्हारी मा और दुलहिन और प्रभावती आश्रम में रहें। मैं चाहता हूँ कि वे सभी स्वावलम्बी होजांय और कुछ लोकसेवा की शक्ति और योग्यता प्राप्त कर लेवें। इसके लिये चरखा का सभी काम—घर का सभी काम और यदि हो सके तो कुछ शुश्रूषा (nursing) का काम भी सीख लेवें तो बहुत अच्छा हो। कुछ अक्षरज्ञान भी हो जाय तो बहुत सुन्दर। यदि एक साल वहां रह जांय और यह समझ कर रह जांय कि यह सब उनको सीखना है तो बहुत उन्नति कर सकेंगी, इसलिये पूज्य बापू का यह विचार मुझे पसन्द है। मैंने इसके पहले कई पत्रों में लिखा है कि विहार में परदा तोड़ने के आन्दोलन में तुम्हारी मा को शरीक होना चाहिये। यदि उनका काम अभी शुरु होता हो तो उसमें उनको जरूर आना चाहिये। पर साथ ही यहां आकर वह कुछ कर सकें इसका निश्चय कर लेना। ऐसा न हो

कि आश्रम से भी गयीं और उस काम में भी न लग कर घर पर गयीं और पुरानी रीतिनीति बर्तने लगीं, तो इससे कोई फल नहीं होगा।"

बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने भाई बा० महेन्द्र प्रसाद जी को भी लिखा कि परदा आन्दोलन में अपने घर की स्त्रियों को भी शरीक होना चाहिये। पटने में श्री मगनलाल गांधी जी की मृत्यु के बाद विहार में परदा आन्दोलन और भी जोरों से चला था। बा० राजेन्द्र प्रसाद जी को श्री मगनलाल गांधी की मृत्यु की खबर इंगलैण्ड में ही लगी थी। आपने उस समय अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री मृत्युञ्जय प्रसाद को लिखा था:—

"श्री मगनलाल भाई की मृत्यु की खबर सुनकर बहुत दुःख हुआ। मैं समझता हूं यह घटना पटना में हुई। क्या तुम्हारी माता इस Campaign(आन्दोलन)में शरीक नहीं हो सकती हैं? आश्रम में इतने दिनों तक ठहर कर इतनी हिम्मत और आत्मविश्वास तो अवश्य आजाना चाहिये, और मुझे यह सुनकर इस विदेश में बड़ा आनन्द होगा कि वह भी कुछ सेवा का काम वहां कर रही हैं। देश की उन्नति तब तक नहीं हो सकती जब तक स्त्रीपुरुष दोनों की शक्तियां मिलकर काम न करें। अभी इसकी बड़ी जरूरत है—विशेषकर विहार में, जहां स्त्रियों के बीच काम करने की बहुत आवश्यकता है। यह पत्र उनको दिखलाना और समझा देना।"

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी ने इंगलैण्ड से इस तरह के कई पत्र लिखे थे। प्रायः प्रत्येक पत्र में इस तरह की कुछ न कुछ चर्चा रहती थी। आपका यह स्वभाव रहा है कि आप किसी पर दबाव डालकर कोई

काम कराना नहीं चाहते। केवल समझा बुझा देना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। कुछ समय के बाद आपके घर की महिलाएं परदे को दूर कर सार्वजनिक कार्य में समय समय पर योग देने लगीं। आपकी बड़ी बहन श्रीमती भगवती देवीजी को सत्याग्रह आन्दोलन में १९३३ के मार्च में तीन महीने की सख्त सजा हुई थी और आप हजारीबाग जेल में ए क्लास मे रखी गयी थीं। एक बार बा० राजेन्द्र प्रसाद जी की धर्मपत्नी भी इस आन्दोलन में गिरफ्तार की गयी थीं, पर दो दिनों के बाद ही आप हाजत से छोड़ दी गयीं। उस बार आपके साथ श्रीमती भगवती देवी भी गिरफ्तार हुई थीं और वे भी इसी तरह छोड़ दी गयी थीं।

लोक-सेवा

संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये ,
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः ।

लोक-सेवा बा० राजेन्द्र प्रसाद जी का जीवन व्रत है। आप निरा राजनीतिक व्यक्ति नहीं हैं; आपने किसी स्वार्थबुद्धि से राजनीति को नहीं अपनाया। यदि सच पूछा जाय तो आप उस अर्थ में राजनीतिक व्यक्ति हैं भी नहीं जो अर्थ कि साधारणतः इस शब्द का लगाया जाता है। लोक-सेवा के उद्देश्य से ही आपको राजनीतिक मैदान में आना पड़ा है, बड़े बड़े पद और मर्य्यादा पाने की लालसा से नहीं। आज दिन इस देश की स्थिति ही कुछ ऐसी है कि राजनीति से बिलकुल अलग रहकर सच्ची लोक-सेवा नहीं की जा सकती। इस समय देश को राजनीतिक गुलामी से मुक्त करना ही वास्तविक जनसेवा है, क्योंकि यहांके लोगों के सारे कष्टों की जड़ यही गुलामी है। राजनीति में आपके पड़ने का यही कारण हुआ। अतएव कांग्रेस कार्य के अलावे लोक-सेवा के और भी जो कार्य उपस्थित होते हैं उनमें आप तत्परता के साथ लग जाते हैं। सेवा का यह भाव आपमें प्रारम्भ से ही है। सन १९१३ की बात है, उस साल दामोदर नदी में भयंकर बाढ़ आयी थी, वर्द्धमान और उसके आसपास के कई जिले जलमग्न होगये थे। बाढ़पीड़ित स्थानों में लोगों की सहायता पहुंचाने के लिये कलकत्ते में चन्दा

एकत्र किया जाने लगा। राजेन्द्र बाबू भी इस काम में लग पड़े। उसी समय पटना जिले में जोरों की बाढ़ हुई थी। पुनपुन नदी के बहुत बढ़ जाने से बाढ़ और बिहार का सबडिविजन बिलकुल जलप्लावित हो गया था, लोग त्राहि त्राहि मचा रहे थे। राजेन्द्र बाबू को जब यह खबर लगी तो आप अपनी वकालत स्थगित कर लोगों की सेवा करने को तुरत वहां दौड़ पड़े, क्योंकि कलकत्ते की अपेक्षा वहां आपकी अधिक आवश्यकता थी। अपने साथ में आप कुछ विद्यार्थी स्वयंसेवकों को भी लाये और बाढ़ पीड़ित स्थानों में जाकर लोगों को अन्नवस्त्र और दवा आदि बांटने लगे। इस काम में बाबू अनुग्रह नारायण सिंह और स्व० बाबू शम्भू शरण वगैरह भी आपके सहायक थे। आपलोग दिन भर नावें लेकर लोगों की सहायता करते थे और रात में रेलवे के किनारे या स्टेशनों के प्लेटफार्म पर आकर सोते थे। सन १९१३ के जमाने में हाईकोर्ट के एक बड़े और नामी वकील का इतनी तकलीफ उठा कर लोगों की सेवा करना एक बहुत बड़ी बात थी। इस अंगरेजी शानवान के जमाने में सेवा का इस तरह का पथप्रदर्शक कार्य बिहार में शायद पहलेपहल बा० राजेन्द्र प्रसादजी ने ही किया। पटने में वकालत करते वक्त भी आपने एक बार बलिया जिले के बाढ़पीड़ितों की बड़ी सेवा की थी। इसी तरह समय समय पर आपने छपरा, आरा और दरभंगा जिले में बाढ़ के कारण कष्ट में पड़े लोगों को बहुत मदद पहुंचायी।

सन १९२३ ई० में गंगा की भयंकर बाढ़ के कारण शाहाबाद,

लोक-सेवा

संसारदुःखदलनेन छभूपिता ये,
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः।

लोक-सेवा बा० राजेन्द्र प्रसाद जी का जीवन व्रत है। आप निरा राजनीतिक व्यक्ति नहीं हैं; आपने किसी स्वार्थबुद्धि से राजनीति को नहीं अपनाया। यदि सच पूछा जाय तो आप उस अर्थ में राजनीतिक व्यक्ति हैं भी नहीं जो अर्थ कि साधारणतः इस शब्द का लगाया जाता है। लोक-सेवा के उद्देश्य से ही आपको राजनीतिक मैदान में आना पड़ा है, बड़े बड़े पद और मर्य्यादा पाने की लालसा से नहीं। आज दिन इस देश की स्थिति ही कुछ ऐसी है कि राजनीति से बिलकुल अलग रहकर सच्ची लोक-सेवा नहीं की जा सकती। इस समय देश को राजनीतिक गुलामी से मुक्त करना ही वास्तविक जनसेवा है, क्योंकि यहांके लोगों के सारे कष्टों की जड़ यही गुलामी है। राजनीति में आपके पड़ने का यही कारण हुआ। अतएव कांग्रेस कार्य के अलावे लोक-सेवा के और भी जो कार्य उपस्थित होते हैं उनमें आप तत्परता के साथ लग जाते हैं। सेवा का यह भाव आपमें प्रारम्भ से ही है। सन १६१३ की बात है, उस साल दामोदर नदी में भयंकर बाढ़ आयी थी, बर्दमान और उसके आसपास के कई जिले जलमग्न होगये थे। बाढ़पीड़ित स्थानों में लोगों की सहायता पहुंचाने के लिये कलकत्ते में चन्दा

एकत्र किया जाने लगा। राजेन्द्र बाबू भी इस काम में लग पड़े। उसी समय पटना जिले में जोरों की बाढ़ हुई थी। पुनपुन नदी के बहुत बढ़ जाने से बाढ़ और विहार का सबडिविजन बिल्कुल जलप्लावित हो गया था, लोग त्राहि त्राहि मचा रहे थे। राजेन्द्र बाबू को जब यह खबर लगी तो आप अपनी वकालत स्थगित कर लोगों की सेवा करने को तुरत वहां दौड़ पड़े, क्योंकि कलकत्ते की अपेक्षा वहां आपकी अधिक आवश्यकता थी। अपने साथ में आप कुछ विद्यार्थी स्वयंसेवकों को भी लाये और बाढ़ पीड़ित स्थानों में जाकर लोगों को अन्नवस्त्र और दवा आदि बांटने लगे। इस काम में बाबू अनुग्रह नारायण सिंह और स्व० बाबू शम्भू शरण वगैरह भी आपके सहायक थे। आपलोग दिन भर नावें लेकर लोगों की सहायता करते थे और रात में रेलवे के किनारे या स्टेशनों के प्लैटफार्म पर आकर सोते थे। सन १९१३ के जमाने में हाईकोर्ट के एक बड़े और नामी वकील का इतनी तकलीफ उठा कर लोगों की सेवा करना एक बहुत बड़ी बात थी। इस अंगरेजी शानशान के जमाने में सेवा का इस तरह का पथप्रदर्शक कार्य विहार में शायद पहलेपहल बा० राजेन्द्र प्रसादजी ने ही किया। पटने में वकालत करते वक्त भी आपने एक बार बलिया जिले के बाढ़पीड़ितों की बड़ी सेवा की थी। इसी तरह समय समय पर आपने छपरा, आरा और दरभंगा जिले में बाढ़ के कारण कष्ट में पड़े लोगों को बहुत मदद पहुंचायी।

सन १९२३ ई० में गंगा की भयंकर बाढ़ के कारण शाहाबाद,

लोक-सेवा

संसारदुःखदलनेन सुभूपिता ये ,
धन्या नरा विहितकर्मपरोपकाराः ।

लोक-सेवा बा० राजेन्द्र प्रसाद जी का जीवन व्रत है। आप निरा राजनीतिक व्यक्ति नहीं हैं; आपने किसी स्वार्थबुद्धि से राजनीति को नहीं अपनाया। यदि सच पूछा जाय तो आप उस अर्थ में राजनीतिक व्यक्ति हैं भी नहीं जो अर्थ कि साधारणतः इस शब्द का लगाया जाता है। लोक-सेवा के उद्देश्य से ही आपको राजनीतिक मैदान में आना पड़ा है, बड़े बड़े पद और मर्य्यादा पाने की लालसा से नहीं। आज दिन इस देश की स्थिति ही कुछ ऐसी है कि राजनीति से बिलकुल अलग रहकर सच्ची लोक-सेवा नहीं की जा सकती। इस समय देश को राजनीतिक गुलामी से मुक्त करना ही वास्तविक जनसेवा है, क्योंकि यहांके लोगों के सारे कष्टों की जड़ यही गुलामी है। राजनीति में आपके पड़ने का यही कारण हुआ। अतएव कांग्रेस कार्य के अलावे लोक-सेवा के और भी जो कार्य उपस्थित होते हैं उनमें आप तत्परता के साथ लग जाते हैं। सेवा का यह भाव आपमें प्रारम्भ से ही है। सन १९१३ की बात है, उस साल दामोदर नदी में भयंकर बाढ़ आयी थी, वर्दमान और उसके आसपास के कई जिले जलमग्न होगये थे। बाढ़ पीड़ित स्थानों में लोगों की सहायता पहुंचाने के लिये कलकत्ते में चन्दा

एकत्र किया जाने लगा। राजेन्द्र बाबू भी इस काम में लग पड़े। उसी समय पटना जिले में जोरों की बाढ़ हुई थी। पुनपुन नदी के बहुत बढ़ जाने से बाढ़ और विहार का सबडिविजन बिलकुल जलप्लावित हो गया था, लोग त्राहि त्राहि मचा रहे थे। राजेन्द्र बाबू को जब यह खबर लगी तो आप अपनी वकालत स्थगित कर लोगों की सेवा करने को तुरत वहां दौड़ पड़े, क्योंकि कलकत्ते की अपेक्षा यहां आपकी अधिक आवश्यकता थी। अपने साथ में आप कुछ विद्यार्थी स्वयंसेवकों को भी लाये और बाढ़ पीड़ित स्थानों में जाकर लोगों को अन्नवस्त्र और दवा आदि बांटने लगे। इस काम में बाबू अनुग्रह नारायण सिंह और स्व० बाबू शम्भू शरण वगैरह भी आपके सहायक थे। आपलोग दिन भर नावें लेकर लोगों की सहायता करते थे और रात में रेलवे के किनारे या स्टेशनों के प्लैटफार्म पर आकर सोते थे। सन १९१३ के जमाने में हाईकोर्ट के एक बड़े और नामी वकील का इतनी तकलीफ उठा कर लोगों की सेवा करना एक बहुत बड़ी बात थी। इस अंगरेजी शानबान के जमाने में सेवा का इस तरह का पथप्रदर्शक कार्य विहार में शायद पहलेपहल बा० राजेन्द्र प्रसादजी ने ही किया। पटने में वकालत करते वक्त भी आपने एक बार बलिया जिले के बाढ़पीड़ितों की बड़ी सेवा की थी। इसी तरह समय समय पर आपने छपरा, आरा और दरभंगा जिले में बाढ़ के कारण कष्ट में पड़े लोगों को बहुत मदद पहुंचायी।

सन १९२३ ई० में गंगा की भयंकर बाढ़ के कारण शाहाबाद,

लोक-सेवा

संसारदुःखदलनेन सुभूषि
धन्या नरा विहितकर्म

लोक-सेवा बा० राजेन्द्र प्रसाद जी
निरा राजनीतिक व्यक्ति नहीं हैं;
राजनीति को नहीं अपनाया। यदि सच
में राजनीतिक व्यक्ति हैं भी नहीं जो
का लगाया जाता है। लोक-सेवा के
नीतिक मैदान में आना पड़ा है, वह
लालसा से नहीं। आज दिन इस
है कि राजनीति से बिलकुल अलग
की जा सकती। इस समय दे
मुक्त करना ही वास्तविक जनसे
सारे कष्टों की जड़ यही गुला
का यही कारण हुआ। अतएव
के और भी जो कार्य उपस्थित
लग जाते हैं। सेवा का यह भाव
बात है, उस साल दामोदर न
और उसके आसपास के
स्थानों में लोगों की सहाय

आप राजनीतिक बन्दी की अवस्था में रोगग्रस्त होकर अस्पताल में पड़े थे। प्रायः पांच महीने तक अस्पताल में पड़े रहने और प्रान्त में प्राप्य अच्छी से अच्छी इलाज से भी जब आप पूर्ण स्वस्थ होते दिखाई न पड़े तो मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट पर सरकार ने आपको कारावास से मुक्त कर देने का निश्चय किया। यह निश्चय भूकम्प के चन्द ही घंटे पहले हुआ था। अतएव राजेन्द्र बाबू भूकम्प के तीसरे दिन १७ जनवरी को छोड़ दिये गये। अभी आपका इलाज जारी था और आप चलफिर सकने लायक भी नहीं हुए थे कि अचानक विहार पर यह वज्रपात हुआ। दो ढाई मिनट के अन्दर ही अन्दर विहार का सबसे अधिक उर्वर और समृद्धिशाली भाग स्मशान और मरुभूमि में परिणत हो गया। जमीन फटकर बालू के ढेर लग गये, उन दरारों से जल के जो स्त्रोत निकले उसने विस्तृत भूभाग को जलमग्न कर दिया। शहर के शहर और गांव गांव के नष्ट भ्रष्ट हो गये, लाखों मनुष्य गृहहीन हुए, करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हुई, हजारों आदमियों की जानें गयीं। इस तरह असहायों, अनाथों और विधवाओं के करुणक्रन्दन से एक बार विहार का गगनमंडल गूंज उठा। उस समय दीनबन्धु राजेन्द्र बाबू अपनी रुग्णावस्था का कब ख्याल कर सकते थे। वे कष्टपीड़ितों को कष्टों से बचाने के कार्य में अस्पताल में अपनी रोगशय्या से ही लग पड़े। लग पड़े सहानुभूति के किसी बाहरी दिखावट या प्रदर्शन के कार्य में नहीं, बल्कि एक ऐसे ठोस कार्य में जिससे लोगों की वास्तविक सेवा हो सकती थी। जेलमुक्त होते ही २० जनवरी को आपने इस काम

के लिये विहार सेन्ट्रल रिलीफ कमिटी की स्थापना की और संगठित रूप से लोगों के कष्टनिवारण का कार्य आरम्भ कर दिया।

रिलीफ कमिटी कायम कर और उससे आशातीत सफलता प्राप्त कर बाबू राजेन्द्र प्रसादजी ने एक बार फिर अपनी अद्भुत् और प्रबल संगठनशक्ति का परिचय दिया। भूकम्प के प्रारम्भिक दिनों में जिसने आपको नजदीक से देखा था वह जानता है कि किस तरह आप रुग्नावस्था में भी कठिन परिश्रम करते थे और लोगों के हजार मना करने पर भी सुबह ४ बजे से लेकर बड़ी रात तक दम लेनेकी फुर्सत नहीं लेते थे। ज्योंही आप कुछ बाहर घूमफिर सकने लायक हुए त्योंही आप क्षतिग्रस्त स्थानों की हालत देखने को निकल पड़े। शहर शहर और गांव गांव जाकर आपने अपनी आंखों दुर्दशा देखी। क्षतिग्रस्त स्थानों का वर्णन आपने समाचारपत्रों में प्रकाशित कराया। विहार की इस विकट परिस्थिति का परिश्रमपूर्वक आपने जैसा अध्ययन और मनन किया तथा विविध जटिल समस्याओं को हल करने के उपाय सोच निकालने की चेष्टा की वैसा कोई दूसरा कर सकता था या नहीं कहना कठिन है। कष्टपीड़ितों की दशा बताकर उनके लिये आपने तमाम हिन्दुस्तान से धनजन की अपील की। महात्मा गांधी और कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर आदि के द्वारा आपने विदेशों से भी अपील करायी। श्री सी. एफ. एन्ड्रूज और श्री सुभाषचन्द्र बोस आदि आपके अनुरोधपर विदेशों से सहायता जुटाने के काम में लगे। विहार के सारे कांग्रेस संगठन को राजेन्द्र बाबू ने भूकम्प पीड़ितों की सेवा में लगा

दिया। आपकी पुकार पर हिन्दुस्तान के अन्य सभी भागों से अनेकानेक स्त्री और पुरुष सेवाकार्य में आजुटे। देश के कितने ही प्रमुख नेताओं जैसे महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, पं० जवाहर लाल नेहरू, सेठ जमनालाल बजाज आदि ने आपके सेवाकार्य में हाथ बटाया। महात्मा गांधीजी ने एक महीने से भी अधिक का समय सिर्फ इस काम में दिया और बाबू राजेन्द्र प्रसादजी के साथ अनेक स्थानों में घूम कर लोगों की अवस्था देखी, उन्हें सान्त्वना दी और उनकी सहायता के तरीकों पर विचार किया। इस तरह सब लोगों की सहायता और सहयोग से बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी विध्वस्त विहार के पुनर्निर्माण के कार्य में लगे।

महात्मा गांधी के शब्दों में निस्सन्देह परमात्मा ने विहार के कष्ट निवारण के लिये बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी को चुना। विहारके इस महासंकट के अवसर पर कुछ लोगोंने जब महात्मा जी से हरिजन कार्य स्थगित कर विहार आनेके लिये आग्रह किया था तो आपने कहा था :—Rajendra Prasad is one of the best among my co-workers. He can command my services whenever he likes. The Harijan cause is as much his as it is mine, as even the cause of Behar is as much mine as it is his. But God has summoned him to the Behar relief as He has choosen the Harijan cause for me. अर्थात्—मेरे साथ काम करनेवालों में राजेन्द्र प्रसाद सबसे अच्छों में एक हैं। वे जब कभी चाहें मुझे सेवा के लिये बुला सकते हैं। हरिजन-कार्य उनका उतना ही है जितना मेरा, और उसी तरह विहारका काम मेरा

उतना ही है जितना उनका। परन्तु परमात्मा ने उन्हें विहार की सहायता के लिये बुलाया है जिस तरह मुझे उसने हरिजन-कार्य के लिये चुना है।

वाबू राजेन्द्र प्रसाद जी की अपील पर भूकम्प पीड़ितों के लिये सभी स्थानों से रुपये तथा अन्य रकमें आने लगीं। भूकम्प सहायता केलिये यों तो कलकत्ते का मेयर फंड तथा और भी छोटीमोटी वहुतसी समितियां थीं जिनके अपने अपने फंड थे, पर सबसे बड़े दो फंड थे, एक तो वायसराय का फंड, दूसरा राजेन्द्र वाबू का सेन्ट्रल रिलीफ फंड। जहां वायसराय फंड के लिये देश के राजे-महाराजे और सरकारी व्यक्ति रुपये दे रहे थे एवं सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी संस्थाएं रुपये एकत्र कर रही थीं वहां राजेन्द्र वाबू के फंड में सेठसाहुकार और आम जनता रुपये पहुंचा रही थी। कुछ समय तक तो वायसराय के फंड और राजेन्द्र वावू के फंड में एक होड़ सी मालूम पड़ती थी। राजेन्द्र वाबू पर अटल विश्वास रहने के कारण राजेन्द्र वाबू के फंड में रुपये देना लोगों को अधिक अपील करता था। 'स्टेट्समैन' जैसे अर्द्ध सरकारी गोरे पत्र तक ने इस वात को महसूस किया था और स्पष्ट लिखा था —We quite appreciate that there is a large public to whom Babu Rajendra Prasad's fund make the more persuasive appeal. इसी पत्रने १० मार्च १९३४ को भूकम्प के सम्बन्ध में अपना अग्रलेख लिखते हुए कहा था कि भूकम्प पीड़ितों के लिये सबसे बड़े दो फंड हैं एक वायसराय का जिसमें करीब ३० लाख रुपये हो रहे हैं और दूसरा सेन्ट्रल रिलीफ का जिसमें करीब २० लाख रुपये होते हैं। सेन्ट्रल रिलीफ

फंड के सम्बन्ध में पत्र ने राजेन्द्र बाबू की प्रशंसा करते हु' लिखा:—

The main agent in raising this sum has beet. Babu Rajendra Prasad, and tho fine response to his appeal is a sufficient proof that this Congress worker enjoys the complete confidence of a very wide Indian Public. He was released from prison immediately after the earthquake and gave an immediate practical lead in his unfortunate province at a time when other Congress leader failed to realise the nature of the catastrophe or were too wedded to their own programmes to grasp the necessity for suspending them.

अर्थात्—इस रकम के उठाने में मुख्य साधन रूप बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी रहे हैं। इनकी अपील की जो ऐसी अच्छी सुनवाई हुई है वह इस बात का काफी सबूत है कि कांग्रेस के इस कार्यकर्त्ता पर एक अत्यन्त व्यापक भारतीय जनता का पूर्ण विश्वास है। भूकम्प के बाद ही ये जेल से छोड़े गये और इन्होंने तुरत अपने अभागे प्रान्त में कार्य करने के सम्बन्ध में व्यावहारिक रूप से रास्ता दिखाया और वह भी ऐसे समय में जब कि दूसरे कांग्रेस नेता इस महासंकट के स्वरूप को नहीं समझ सके या अपने कार्यक्रमों से इतने सम्बद्ध थे कि उन्हें स्थगित करने की आवश्यकता नहीं महसूस करसके।

विहार सेन्ट्रल रिलीफ कमिटी पहले प्रान्तीय संस्था थी और इसमें केवल विहार प्रान्त के व्यक्ति ही सदस्य थे, पर पीछे जब कार्य को

उतना ही है जितना उनका। परन्तु परमात्मा ने उन्हें विहार की सहायता के लिये बुलाया है जिस तरह मुझे उसने हरिजन-कार्य के लिये चुना है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी की अपील पर भूकम्प पीड़ितों के लिये सभी स्थानों से रुपये तथा अन्य रकमें आने लगीं। भूकम्प सहायता केलिये यों तो कलकत्ते का मेयर फंड तथा और भी छोटीमोटी वहुतसी समितियां थीं जिनके अपने अपने फंड थे, पर सबसे बड़े दो फंड थे, एक तो वायसराय का फंड, दूसरा राजेन्द्र वावू का सेन्ट्रल रिलीफ फंड। जहां वायसराय फंड के लिये देश के राजे-महाराजे और सरकारी व्यक्ति रुपये दे रहे थे एवं सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी संस्थाएं रुपये एकत्र कर रही थीं वहां राजेन्द्र वावू के फंड में सेठसाहुकार और आम जनता रुपये पहुंचा रही थी। कुछ समय तक तो वायसराय के फंड और राजेन्द्र वावू के फंड में एक होड़ सी मालूम पड़ती थी। राजेन्द्र वावू पर अटल विश्वास रहने के कारण राजेन्द्र वावू के फंड में रुपये देना लोगों को अधिक अपील करता था। 'स्टेट्समैन' जैसे अर्द्ध सरकारी गोरे पत्र तक ने इस वात को महसूस किया था और स्पष्ट लिखा था —We quite appreciate that there is a large public to whom Babu Rajendra Prasad's fund make the more persuasive appeal. इसी पत्रने १० मार्च १९३४ को भूकम्प के सम्बन्ध में अपना अग्रलेख लिखते हुए कहा था कि भूकम्प पीड़ितों के लिये सबसे बड़े दो फंड हैं एक वायसराय का जिसमें करीब ३० लाख रुपये हो रहे हैं और दूसरा सेन्ट्रल रिलीफ का जिसमें करीब २० लाख रुपये होते हैं। सेन्ट्रल रिलीफ

फंड के सम्बन्ध में पत्र ने राजेन्द्र बाबू की प्रशंसा करते हुए आगे लिखा:—

The main agent in raising this sum has been Babu Rajendra Prasad, and the fine response to his appeal is a sufficient proof that this Congress worker enjoys the complete confidence of a very wide Indian Public. He was released from prison immediately after the earthquake and gave an immediate practical lead in his unfortunate province at a time when other Congress leader failed to realise the nature of the catastrophe or were too wedded to their own programmes to grasp the necessity for suspending them.

अर्थात्—इस रकम के उठाने में मुख्य साधन रूप बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी रहे हैं। इनकी अपील की जो ऐसी अच्छी सुनवाई हुई है वह इस बात का काफी सबूत है कि कांग्रेस के इस कार्यकर्त्ता पर एक अत्यन्त व्यापक भारतीय जनता का पूर्ण विश्वास है। भूकम्प के बाद ही ये जेल से छोड़े गये और इन्होंने तुरत अपने अभागे प्रान्त में कार्य करने के सम्बन्ध में व्यावहारिक रूप से रास्ता दिखाया और वह भी ऐसे समय में जब कि दूसरे कांग्रेस नेता इस महासंकट के स्वरूप को नहीं समझ सके या अपने कार्यक्रमों से इतने सम्बद्ध थे कि उन्हें स्थगित करने की आवश्यकता नहीं महसूस करसके।

विहार सेन्ट्रल रिलीफ कमिटी पहले प्रान्तीय संस्था थी और इसमें केवल विहार प्रान्त के व्यक्ति ही सदस्य थे, पर पीछे जब कार्य को

महत्ता और शुरुता समझी गयी तो इसे अखिल भारतीय रूप देने का विचार हुआ और इसमें हिन्दुस्तान के बहुत से प्रमुख व्यक्तियों को जैसे महात्मा गांधी, कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर तेज बहादुर सप्रू, पं० मदनमोहन मालवीय, सर पी० सी० राय, डा० अनसारी, श्री जयकर, डा० मुंजे, सेठ घनश्यामदास बिड़ला और श्रीमती सरोजिनी नायडू आदि को सम्मिलित किया गया और इसकी बैठक कर कार्यपद्धति का निर्णय किया गया तथा एक कार्यसमिति कायम हुई। राजेन्द्र बाबू पहले भी कमिटी के सभापति थे और उसके अखिल भारतीय रूप दिये जानेपर भी सभापति निर्वाचित हुए। निर्वाचन के समय कलकत्ता कारपोरेशन के मेयर बाबू सन्तोष कुमार बसु ने कहा थाः—

It was my fortune—whether good or bad to go over the affected areas and see things for myself, and when going round there was but one personality that came to my mind—and it was that of Babu Rajendra Prasad. Rajendra Babu was an asset to the country—a national asset. Inspite of his feeble health he took upon himself the great work mitigating the suffering of the earth-quake striken people, working day and night and I donot know who else was there whose services could be secured at this juncture for leadership in the great work of relief.

अर्थात्—मेरा यह भाग्य था—चाहे सौभाग्य हो या दुर्भाग्य—कि मैं

क्षतिग्रस्त स्थानों में घूम सका और अपनेसे सब चीजें देख सका। घूमते समय केवल एक व्यक्तित्व मेरे ध्यान में आया और वह था बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी का व्यक्तित्व। राजेन्द्र बाबू देश की सम्पत्ति हैं— एक राष्ट्रीय सम्पत्ति। दुर्बल स्वास्थ्य के रहते भी इन्होंने भूकम्प पीड़ितों के कष्ट लाघव करने के महान कार्य को अपने ऊपर लिया और रातोदिन इसमें लगे रहे। मैं नहीं जानता कि दूसरा कौन था जिसकी सेवाएं इस संकट काल में सहायता के इस महान कार्य के नेतृत्व के लिये प्राप्त की जा सकती थीं।

इस प्रकार श्री राजेन्द्र प्रसाद जी भूकम्प पीड़ितों के कष्टनिवारण में लगे हुए हैं। यह काम अभी चल रहा है और सालोंतक इसके जारी रहने की संभावना है इसलिये इस सम्बन्ध में अभी और कुछ लिखना असामयिक है।

जनसेवा के इन कार्यों के करने में समय समय पर राजेन्द्र बाबू को नाना प्रकार के कष्ट सहने पड़ते हैं। न कहीं खाने का ठिकाना रहता है और न सोने का। कहीं चने चबाने पड़ते हैं तो कहीं सुन्दर सुस्वादु भोजन भी मिल जाता है। कहीं सोने के लिये पलंग मिलता है तो कहीं भूमि ही शय्या बनती है। फिर भी आप इन सुखदुःखों की कोई परवाह न कर सेवाकार्य में दत्तचित रहते हैं।

क्वचित् भूमौ शय्या क्वचिदपि च पर्य्यंक शयनम्,
क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदन रुचिः।
क्वचित्कंथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो,
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्॥

चरित्र-दर्शन

Fame is what you have taken,
Character's what you give.
When to this truth you waken,
Then you begin to live.

देशपूज्य वावू राजेन्द्र प्रसाद जी के प्रति लोगों की बड़ी श्रद्धा और भक्ति रहती है। जो कोई आपको एक वार देखता है वह आपकी सादगी, सरलता, नम्रता और साधुता पर मुग्ध हो जाता है। आपके ये गुण ही लोगों के हृदयों में आपके प्रति श्रद्धा और भक्ति पैदा कर देते हैं। इतनी उच्च कोटि की अंगरेजी शिक्षा प्राप्त करने पर भी अंगरेजीपन की कमी आपमें वू तक नहीं आयी। अंगरेजी शिक्षा का किसी प्रकार का दोष आपमें आने नहीं पाया। प्रारम्भ से ही आपका सादा रहनसहन और उच्च विचार रहा। एक धनिक व्यक्ति के पुत्र होकर भी आप कभी ठाटवाट या शानशौकत में नहीं रहे। विलासिता तो आपको कभी छू तक नहीं गयी। अव तो आपने वास्तव में अपनेको गरीबों में मिला दिया है। आपके समान त्याग और तपस्या वहुत कम लोगों में दीख पड़ती है।

वैयक्तिक जीवन का प्रभाव लोगों पर वहुत पड़ता है। कोई

सार्वजनिक नेता तबतक आम जनता के हृदयों पर शासन नहीं कर सकता जबतक उसका वैयक्तिक जीवन पवित्र नहीं हो। जिसका वैयक्तिक जीवन जितना ही अधिक शुद्ध और पवित्र होगा वह लोगों पर उतना ही अधिक प्रभाव डाल सकेगा। महात्मा गांधी के भारतीय हृदय सम्राट होने का यही रहस्य है और यही रहस्य है इस बात का भी कि इतने थोड़े समय में बा० राजेन्द्र प्रसाद जी सबके श्रद्धा और प्रीतिभाजन बन सके।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी में स्वार्थत्याग उच्च कोटि का है। शुरू से ही आपका जीवन त्यागमय रहा। जो कुछ आपने धनोपार्जन किया सब परोपकार में ही खर्च करते गये। अपने लिये या अपने परिवार के लिये कुछ बचा नहीं रखा। आपको मानमर्य्यादा, सुख-ऐश्वर्य्य पाने की कभी लालसा नहीं रही। आपका सारा जीवन ऐसा उज्ज्वल रहा, आप ऐसे प्रतिभाशाली हुए कि यदि आप बड़े बड़े पद और ओहदे पाने की जरा भी ख्वाहिश रखते तो आसानी से पा सकते थे, प्रचुर धनसम्पत्ति एकत्र करना चाहते तो आसानी से कर सकते थे, लेकिन इस ओर कभी आपका ध्यान नहीं गया; हाईकोर्ट में भी अगर आप कुछ दिनों तक और रहते तो निस्सन्देह आप हाईकोर्ट के जज बनाये जाते। लेकिन इन सब बातों से आपको क्या मतलब। आपने तो प्रारम्भ से ही देशसेवा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना रखा था, इसलिये अपने सामने बड़े बड़े प्रलोभनों के रहते भी आप उसमें न फँस कर देशसेवा में आ जुटे।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी बड़े ही शीलवन्त और नम्र स्वभाव के व्यक्ति हैं। अभिमान आपमें कभी नहीं रहा। क्रोध करते शायद ही कभी किसीने देखा हो। आपने कभी किसीको दुःख पहुंचाना नहीं चाहा। अहिंसा आपके जीवन का मूलमंत्र रहा है। आप सदा सबके एकसे प्रेमपात्र बने रहे। कड़े से कड़े दिलवाले भी आपके सामने आने पर मोम बन जाते हैं। किसीके साथ आप की किसी तरह की शत्रुता नहीं रहती। आपके विपक्षी भी सदा आपपर अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाते हैं। सादगी आपके जीवन की एक विशेषता रही है। ट्रेनों में अक्सर तीसरे दरजे में ही सफर करना, शहरों में प्रायः इक्के टमटमों पर ही बैठकर घूमना आपका साधारण नियम सा है। आम तौर पर सुबह के जलपान में फुला हुआ चना ही आपके लिये पर्य्याप्त होता है। शाम को यदि आवश्यकता हुई तो फिर इसी प्रकार की कोई साधारण चीज आती है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी हमेशा एक क्षुद्र सेवक की तरह काम करते रहे हैं। सदा शान्तिपूर्वक चुपचाप काम करने में ही आप को आनन्द आया, कभी आपने नाम नहीं चाहा, लीडरी की धुन आपमें कभी नहीं आयी। खामखाह अपनेको लोगों के सामने रखना आपको कभी पसन्द नहीं हुआ। जहां कितने ही नेता अपनी नामवरी के लिये सब कुछ करने को तैयार रहते हैं, कितने ही लोग इस ख्याल से कि पत्रों में मेरा नाम छपे, मैं नेता समझा जाऊं, जब कभी मौका लगता है झट अपना वक्तव्य लेकर

प्रेसों में दौड़ पड़ते हैं, कांग्रेस के अधिवेशनों में
को उठ खड़े होते हैं। लेकिन बाबू राजेन्द्र प्रसाद
सब बातों का सपने में भी ख्याल नहीं रहता है।
लीडर बनने की धुन में जरूरत बेजरूरत पार्टियां
किसी प्रस्ताव को लेकर विरोध करते हैं, संशोधन पेश
अपने लम्बेचौड़े सिद्धान्त हांकते हैं, लेकिन बाबू राजेन्द्र
जी में ये सब बातें कभी नहीं पायी गयीं। आज आप
ही वर्षों से कांग्रेस में शामिल हैं, उसके अधिवेशनों में
करते हैं, उसके स्थानापन्न सभापति और प्रधान मन्त्री आदि
उच्च से उच्च पद पर काम कर चुके हैं, वर्षों से उसकी कार्य
समिति के सदस्य रह रहे हैं, लेकिन आज तक कांग्रेस अधिवेशनों
में अत्यन्त आवश्यक होने पर दो चार बार के सिवा कभी नहीं
बोले। बड़े आदमियों में यशोलिप्सा एक अन्तिम दोष रह जाता
है, पर राजेन्द्र बाबू में वह भी नहीं है। संसार में सब कुछ का
त्याग करना आसान है परन्तु मान और बड़ाई का लोभ
त्यागना वास्तव में बड़ा कठिन काम है। कबीर साहब ने
बहुत ठीक कहा है :—

> कंचन तजना सहज है, सहज तिया का नेह।
> मान बड़ाई त्यागना, कबिरा दुर्लभ येह॥

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी में काम करने की ताकत बहुत है।
आप व्यर्थ के गपशप या काहिलपन में कभी एक मिनट भी बरबाद
करना नहीं चाहते हैं। इतने दुबले पतले होकर भी दिनरात

काम करने में लगे रहते हैं। आज यहां तो कल वहां, बराबर आप का दौरा बना रहता है। चुपचाप बैठे रहना तो आप जानते ही नहीं। इतना अधिक काम करने में समर्थ होने का कारण यह है कि आप अपना जीवन सुसंयमित बनाये रखते हैं। अधिक रात बीतने के पहले ही सो जाना और नित्य नियमित रूप से चार बजे भोर में ही उठकर शौचादि क्रिया और ईश्वरोपासना आदि से निवृत्त हो अपने काम में लग जाना आपके लिये स्वाभाविक बात हो गयी है। खानपान और रहनसहन में भी आप बहुत संयम रखते हैं। ऐसे संयमित जीवन बितानेवाले पुरुष बिरले होते हैं।

नियमित रूप से बराबर चरखा चलाना भी आपकी नित्य क्रिया में शामिल है। जहां कहीं आप सफर में जाते हैं एक चरखा साथ जाता है। कितनी ही काम की भीड़ क्यों न हो, चरखा चलाने का वक्त आप निकाल ही लेते हैं।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी की प्रतिभा और कार्यशक्ति सर्वतोमुखी है। थोड़े में ही सब बातों को समझ लेने की आपकी अद्भुत् शक्ति है। स्मरणशक्ति तो इतनी तीक्ष्ण है कि शीघ्र कोई बात भूलते ही नहीं, वर्षों की छोटी छोटी बातें याद रहती हैं। आपकी वक्तृत्व और लेखनशक्ति दोनों ही उच्च कोटि की हैं। आपके भाषण में एक विचित्र आकर्षण रहता है, आकर्षण का कारण आपका व्यक्तित्व भी होता है। जब कभी आप सभासोसाइटी में बोलने को खड़े होते हैं तो एकाएक निस्तब्धता छा जाती है, सबलोग ध्यान से सुनने को तैयार हो जाते हैं। आपके भाषण के शब्द

नपेतुले होते हैं, कोई व्यर्थ की बात आने नहीं पाती। जो कुछ आप कहते हैं हृदय से कहते हैं, सच्चे दिल से कहते हैं, केवल वक्तृत्वशक्ति दिखलाने के लिये नहीं, इस कारण आपके भाषण का लोगों पर बड़ा असर पड़ता है। लिखने का शौक आपको बहुत रहता है, इसका अभ्यास भी आपको बराबर बना रहा है। काम के बोझ से लदे रहने पर भी आप कुछ लिखने पढ़ने का वक्त निकाल ही लेते हैं।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। आपके आचारविचार की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। ईश्वर में आपकी पूरी आस्था है। भगवद्भजन में आपका बड़ा मन लगता है। गीतादि धार्मिक पुस्तकों का आप बराबर मनन करते हैं। एकादशी व्रतादि किया करते हैं। मांस भक्षण करना आपने बहुत बचपन में ही छोड़ दिया था। किसी धार्मिक सम्प्रदाय के साथ आपका कोई झगड़ा नहीं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब आपके लिये एक से हैं। आपका जीवन एक संन्यासी—एक फकीर के समान है। धन दौलत, स्त्रीपुत्रादि के प्रति आपकी कोई आसक्ति नहीं, इन सबों के साथ आपका नाममात्र का ही सम्बन्ध रहता है। एक बार की बात है, आपके घर पर आपके छोटे पुत्र के विवाह का तिलकोत्सव था। बाहर से बहुत से मेहमान जुटे थे। इस अवसर पर इन पंक्तियों का लेखक भी वहां मौजुद था, उसने देखा कि जहां आपके बड़े भाई बा० महेन्द्र प्रसाद जी और उनके पुत्र बा० जनार्दन प्रसाद सारे कार्यों के प्रबन्ध में व्यस्त थे,

उन्हें दम लेने की फुर्सत नहीं थी, वहां आप बिल्कुल अभ्यागत की तौर पर उत्सव में उपस्थिति देने को आये थे। उस अवसर पर एकाध दिन भी घर पर जो आप ठहरे उस सारे समय में भी आप आसपास के ग्रामोंमें दौरा करते रहे। केवल दिन में भोजन के वक्त और रात में सोने के समय आप घर पर आते थे। आप घर कोई व्यक्ति हों ऐसा मालूम ही नहीं पड़ता था। घर पर का मौका आपको साधारण तौर पर केवल बीमारी के मिलता है। इस तरह दुनियावीपन से बिल्कुल अलग रहने आपको कोई साधु राजेन्द्र तो कोई राजर्षि राजेन्द्र कहा इतने अनासक्त, इतने संयमी, इतने नियमनिष्ठ और परिश्रमी होने के कारण ही देश की इतनी उत्कृष्ट आप समर्थ हो सके हैं।

हिन्दुस्तान में महात्मा गांधी और साधु व्यक्ति ही नेता बन सकते हैं। देशपूज्य बा० जी महात्मा गांधी जी की तरह समूचे देश की अपने हाथों लेंगे इसमें सन्देह नहीं जान पड़ता। हितार्थ परमात्मा आपको पूरा जीवनबल दे यही हम कामना है।

इति शुभम्

विहार-हिन्दी-मन्दिर

की

प्रकाशित अन्य पुस्तकें